INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

सत्यमेव जयते
BPSC

LATEST EDITION

HINDI MEDIUM

Golden Edition

HANDWRITTEN NOTES

BPSC

(प्रारंभिक परीक्षा हेतु)

ACHIEVE YOUR DREAM THROUGH SELF STUDY WITH INFUSION NOTES

BASED ON NEW EXAM PATTERN

PART-3 भारत और बिहार का भूगोल + अर्थव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

BPSC

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – 3

भारत और बिहार का भूगोल + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**BPSC (Bihar Public Service Commission) (प्रारंभिक परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **बिहार लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/y7qfk6

Online Order करें - https://bit.ly/449w0Ms

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

भारत का भूगोल

1.	सामान्य परिचय	1
2.	आकार एवं विस्तार • सीमाएँ • सीमाओं से सम्बन्धित विवाद	2
3.	भारत में प्रमुख स्थलाकृतियाँ / भौतिक भू – आकृतियाँ • भूगर्भिक संरचना • भारत का भौतिक विभाजन • पर्वत, पठार, मैदान, तटीय क्षेत्र, मरुस्थल • द्वीप समूह	11
4.	भारत का अपवाह तंत्र एवं मृदा • अपवाह तंत्र • अपवाह तंत्र की विशेषताएं • नदियों का महत्त्व • प्रमुख झीलें • जलप्रपात	41
5.	भारत की जलवायु • जलवायु को प्रभावित करनें वाले कारक • जलवायु की विशेषताएं • मानसून • कोपेन का जलवायु वर्गीकरण	65
6.	भारत में वन, वनस्पति एवं वन्यजीव अभ्यारण • वन एवं वनस्पति • राष्ट्रीय वन्य जीव डाटाबेस • 17 वीं वन रिपोर्ट	82
7.	भारत में कृषि एवं सिंचाई • भारत में कृषि की मुख्य विशेषताएं एवं समस्याएं	91

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	• कृषि के प्रकार • प्रमुख फसलें व भौगोलिक दशाएं • जल संसाधन	
8.	भारत में प्रमुख खनिज संसाधन • भारत में खनिजों का वितरण • प्रमुख खनिज	106
9.	ऊर्जा संसाधन • उर्जा के स्रोत • उर्जा संसाधन • भारत में उर्जा संसाधन	112
10.	भारत के प्रमुख उद्योग • नई औद्योगिक नीति • औद्योगिक उत्पादन सूचकांक • भारत के प्रमुख उद्योग • राष्ट्रीय इस्पात नीति • भारत के औद्योगिक प्रदेश	121
11.	परिवहन एवं संचार • स्थल परिवहन • जल परिवहन • वायु परिवहन • भारत के प्रमुख बंदरगाह	136
12.	मानव संसाधन • जनसँख्या वृद्धि, वितरण एवं घनत्व • जनसंख्या को प्रभावित करनें वाले कारक • जनगणना- 2011	148
	बिहार का भूगोल	

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

1.	भौगोलिक आकृति एवं विस्तार • भौगोलिक स्थिति व संरचना • चट्टान • प्राकृतिक प्रदेश	154
2.	बिहार में मृदा संसाधन • उत्तरी बिहार की मृदा • दक्षिणी बिहार की मृदा • दक्षिणी सीमान्त पठार की मृदा	162
3.	बिहार का अपवाह तंत्र • नदियाँ • झीलें • जलप्रपात • जलकुंड	164
4.	बिहार के प्रमुख खनिज संसाधन • धात्विक खनिज • अधात्विक खनिज • खनिज आधारित उद्योग	173
5.	बिहार में अनुसूचित जाति • विभिन्न आयोग, योजना एवं विकास मिशन	176
6.	बिहार में वन, वन संपदा तथा वन्य जीव अभ्यारण्य • वन आवरण • वृक्षावरण • वन्य जीव अभ्यारण्य	179
7.	बिहार का जलवायु तंत्र • ऋतुएँ • जलवायु की विशेषता • जलवायु प्रदेश • वर्षा वितरण	184
8.	बिहार में कृषि एवं पशुपालन • भूमि उपयोग प्रतिरूप	187

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	• भूमि उपयोग प्रतिरूप • फसल गहनता • कृषि चुनौतियाँ • पशुपालन	
9.	बिहार में सिंचाई एवं सिंचाई परियोजनाएं • सिंचाई के प्रमुख साधन • बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजना	192
10.	बिहार की जनगणना 2011 • वितरण • वृद्धि • घनत्व • लिंगानुपात • साक्षरता	195
	भारत की अर्थव्यवस्था	
1.	अर्थव्यवस्था – एक परिचय • अर्थव्यवस्था के प्रकार • अर्थव्यवस्था के फायदे व नुकसान • अर्थव्यवस्था के क्षेत्र	200
2.	राष्ट्रीय आय • GDP, NDP, GNP, NNP	205
3.	भारत में बैंकिंग व्यवस्था • बैंकिंग क्षेत्र • बैंकिंग ढांचा • रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया • बैंकों का वर्गीकरण	213
4.	राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ • राजकोषीय नीति की परिभाषा	238

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	• मौद्रिक नीति की परिभाषा	
5.	आर्थिक संवृद्धि एवं विकास	241
6.	लोक वित्त • लोक वित्त का महत्त्व • राजकोषीय उत्तरदायित्व बिल प्रबंधन एक्ट-2003 • वस्तु एवं सेवा कर (GST) • केंद्र- राज्य वित्तीय संबंध • जीएसटी से प्रभावित संवैधानिक अनुच्छेद	243
7.	भारतीय बजट • बजट निर्माण • बजट के प्रकार • बजट निर्माणकारी एजेंसियाँ • रेल बजट v/s आम बजट • बजट 2023-24	255
8.	मुद्रास्फीति : अवधारणा, प्रकार एवं नियंत्रण तंत्र • मुद्रास्फीति के प्रकार • मुद्रा स्फीति के प्रभाव एवं नियंत्रित करने के उपाय • मांग और पूर्ति प्रबंधन	267
9.	भारतीय कृषि क्षेत्र • कृषि के अन्य प्रकार एवं प्रतिरूप • प्रमुख फसलें • हरित क्रान्ति • सिंचाई • जल संसाधन	280

	• राष्ट्रीय जल नीतियाँ • खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र एवं खाद्य प्रबंधनः • कृषिगत सुधार	
10.	औद्योगिक क्षेत्र • औद्योगिक नीति का महत्त्व • भारत में औद्योगिक नीति का विकास • औद्योगिक वित्त • प्रमुख उद्योग- • उदारीकरण, निजीकरण ,वैश्वीकरण और आर्थिक सुधार • अवसरंचना एवं आर्थिक वृद्धि	297
11.	आर्थिक विकास में सरकार की भूमिका • नीति आयोग द्वारा विभिन्न कार्यक्रम	320
12.	सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली एवं पंचवर्षीय योजना • सब्सिडी के प्रकार • सब्सिडी के फायदे • सब्सिडी के नुकसान • सार्वजनिक वितरण प्रणाली • सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लाभ • सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समस्याएँ	322
13.	मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास • मानव विकास सूचकांक • वैश्विक खुशहाली रिपोर्ट 2022	334
14.	गरीबी, बेरोजगारी एवं नई शिक्षा नीति	339
15.	केंद्र सरकार की योजनाएँ	356

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

बिहार की अर्थव्यवस्था

1.	अर्थव्यवस्था का अवलोकन	361
2.	राजकीय वित्तव्यवस्था	367
3.	कृषि एवं सहवर्ती क्षेत्र	371
4.	उधम क्षेत्र	380
5.	श्रम, रोजगार तथा कौशल	386
6.	भौतिक अधिसंरचना	390
7.	ई-शासन	393
8.	ऊर्जा क्षेत्र	403
9.	ग्रामीण विकास	407
10.	नगर विकास	412
11.	बैंकिंग और सहवर्ती क्षेत्र	415
12.	मानव विकास	419
13.	बाल विकास	432
14.	पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रबंधन	440

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारत का भूगोल

अध्याय – 1

सामान्य परिचय

- **अर्थ एवं परिभाषा :-** "ज्योग्राफी" (Geography) अंग्रेजी भाषा का शब्द है , जो ग्रीक (यूनानी) भाषा में **'ज्योग्राफिया '** (Geographia) शब्दावली से प्रेरित है । इसका शाब्दिक अर्थ "पृथ्वी का वर्णन करना है।"
- ज्योग्राफिया शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान **'इरैटॉस्थनीज'** (Eratosthenes 276-194 ई . पू .) ने किया था , इसके पश्चात विश्व स्तर पर इस पृथ्वी के विज्ञान विषय को ज्योग्राफी (भूगोल) नाम से जाना जाने लगा ।
- यूनानी एवं रोमन अधिकांश विज्ञानों ने पृथ्वी को ' चपटा ' या ' तस्तरीनुमा ' माना, जबकि भारतीय साहित्य में पृथ्वी एवं अन्य आकाशीय पिण्डों को हमेशा ' गोलाकार ' मान कर वर्णन किया । इसलिए इस विज्ञान को ' भूगोल ' के नाम से जाना जाता है ।
- भूगोल 'पृथ्वी तल' या भू तल (Earthsurface) का विज्ञान है । इसमें स्थान (Space) व उसके विविध लक्षणों (Variable Characters) , वितरणों (Distributions) तथा स्थानिक सम्बंधों (Spatial Relations) का मानवीय संसार (World of man) के रूप में अध्ययन किया जाता है ।
- "पृथ्वी तल" भूगोल की आधारशिला है , जिस पर सभी भौतिक मानवीय घटनाएँ एवं अन्तः क्रियाएँ सम्पन्न होती रही हैं । ये सभी क्रियाएँ ' समय ' एवं ' स्थान ' के परिवर्तनशील सम्बन्ध में घटित हो रही हैं।
- पृथ्वी तल का भौगोलिक शब्दार्थ बहुत व्यापक है, जिसमें स्थल मण्डल , जल मण्डल , वायुमण्डल, जैव मण्डल , पृथ्वी पर सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रभाव एवं पृथ्वी की गतियों का वैज्ञानिक आंकलन किया जाता है ।

भूगोल में भौतिक एवं मानवीय पहलूओं और उनमें पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन किया जाता है । इसलिए प्रारम्भ से ही भूगोल विषय की दो प्रमुख शाखाएँ उभर कर आयी है। (I)भौतिक भूगोल (ii) मानव भूगोल

- कालान्तर में विशिष्टीकरण (वर्ष 1950 के पश्चात) बढ़ने से इन दो शाखाओं की अनेक उप शाखाएँ विकसित होती गयी , जिससे विषय सामग्री एवं विषय क्षेत्र में समृद्धि आती गई ।
- भूगोल की प्रमुख शाखाएँ एवं उप शाखाएँ निम्नलिखित हैं . -

भौतिक भूगोल	**मानव भूगोल**
1. भू गणित (Geodesy)	1.आर्थिक भूगोल (Economic Geography)
2.भू भौतिकी (Geophysics)	2. कृषि भूगोल (Agricultural Geography)
3.खगोलीय भूगोल (Astronomical Geo.)	3. संसाधन भूगोल (Resource Geography)
4.भू आकृति विज्ञान (Geomorphology)	4. औद्योगिक भूगोल (Industrial Geography)
5. जलवायु विज्ञान (Climatology)	5. परिवहन भूगोल (Transport Geography)
6.समुद्र विज्ञान (Oceanography)	6. जनसंख्या भूगोल (Population Geography)
7.जल विज्ञान (Hydrology)	7. अधिवास भूगोल (Settlement Geography) (i) नगरीय भूगोल (Urban Geography) (ii) ग्रामीण भूगोल (Rural Geography)
8.हिमनद विज्ञान (Glaciology)	8. राजनीतिक भूगोल (Political Geography)
9.मृदा विज्ञान (Soil Geography)	9. सैन्य भूगोल (Military Geography)
10. जैव विज्ञान (Bio - Geography)	10. ऐतिहासिक भूगोल (Historical Geography)

11. चिकित्सा भूगोल (MedicalGeography)	11. सामाजिक भूगोल (Social Geography)
12. पारिस्थितिकी /पर्यावरण भूगोल (Ecology / Environment Geography)	12.सांस्कृतिक भूगोल (Cultural Geography)
13. मानचित्र कला (Cartography)	13. प्रादेशिक नियोजन(Regional Planning)
	14. दूरस्थ संवेदन व जी.आई.एस.(Remote Sensing and G.I.S.)

- **अभ्यासार्थ प्रश्न**

1. भूगोल की जिस शाखा में तापमान, वायुदाब, पवनों की दिशा एवम् गति,आर्द्रता, वायुराशियाँ, विक्षोभ आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है , वह है-

(अ) खगोलीय भूगोल
(ब) मृदा भूगोल
(स) समुद्र विज्ञान
(द) जलवायु विज्ञान **(द)**

2. भूगोल की दो प्रमुख शाखाएँ हैं

(अ) कृषि भूगोल एवं आर्थिक भूगोल
(ब) भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल
(स) पादप भूगोल एवं जीव भूगोल
(द) मौसम भूगोल एवं जलवायु भूगोल **(ब)**

3. किस भूगोलवेत्ता ने भूगोल (Geography) शब्दावली का सर्वप्रथम उपयोग किया ?

(अ) इरेटॉस्थेनीज
(ब) हेरेडोड्स
(स) स्ट्रैबो
(द) टॉलमी **(अ)**

4. पृथ्वी की आयु मानी जाती है

(अ) 4.8 अरब वर्ष
(ब) 5.0 अरब वर्ष
(स) 4.6 अरब वर्ष
(द) 3.9 अरब वर्ष **(स)**

अध्याय – 2

आकार एवं विस्तार

- आर्यों की भरत नाम की शाखा अथवा महामानव भारत के नाम पर हमारे देश का नामकरण भारत हुआ ।
- प्राचीन काल में आर्यों की भूमि के कारण यह आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था ।
- ईरानियों ने सिन्धु नदी के तटीय निवासियों को हिन्दू एवं इस भू - भाग को हिन्दुस्तान का नाम दिया ।
- रोम निवासियों ने सिन्धु नदी को इण्डस तथा यूनानियों ने इण्डोस व इस देश को इण्डिया कहा। यही देश विश्व में आज भारत के नाम से विख्यात है ।
- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. (1269219.34 वर्ग मील) है।

  कर्क रेखा अर्थात् 23½ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है (1) उत्तरी भारत , जो शीतोष्ण कटिबन्ध में फैला है तथा (2) दक्षिणी भारत, जिसका विस्तार उष्ण कटिबन्ध है।

- भारत सम्पूर्ण विश्व का लगभग 1/46 वाँ भाग है।
- क्षेत्रफल के अनुसार रूस, कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील व ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है ।
- यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है ।

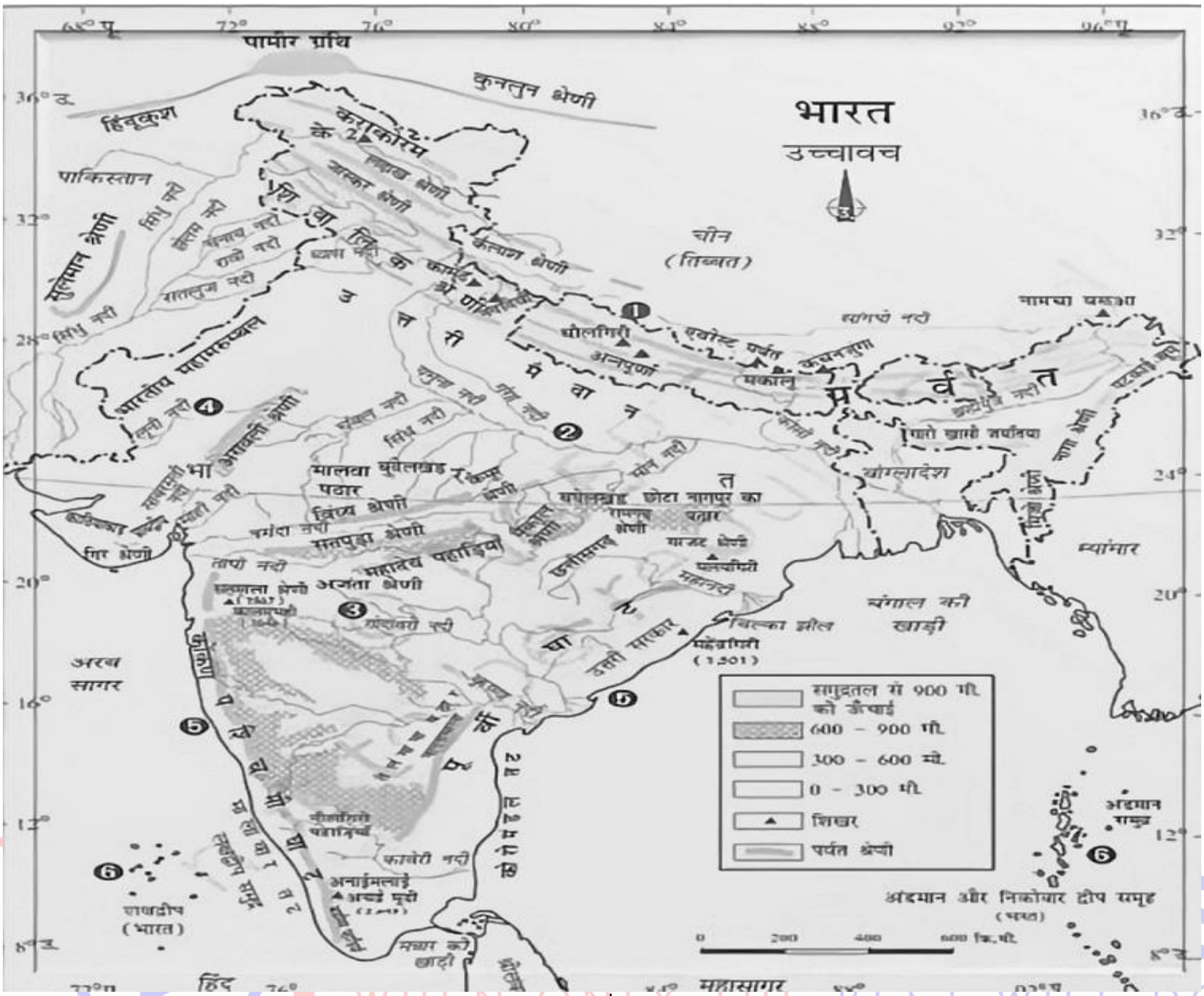

कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों क्रमशः गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प. बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम है।

NOTE- राजस्थान की राजधानी जयपुर, त्रिपुरा की राजधानी अगरतला व मिजोरम की राजधानी आइज़ोल कर्क रेखा के उत्तर में तथा शेष राज्यों की राजधानियाँ दक्षिण में स्थित है।

NOTE – मणिपुर कर्क रेखा के सर्वाधिक उत्तर में स्थित है ।

प्रश्नः- निम्न में से कौन सा भारत का राज्य कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है ?

(1) त्रिपुरा **(2) मणिपुर**

(3) मिजोरम **(4) झारखण्ड**

उत्तर :- (2)

NOTE- कर्क रेखा राजस्थान से न्यूनतम व मध्यप्रदेश से सर्वाधिक गुजरती है।

- भारत का आकार जापान से नौ गुना तथा इंग्लैण्ड से 14 गुना बड़ा है ।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है।
- भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत (मुख्य भूमि) का दक्षिणतम बिन्दु - कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु) है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।

- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) है ।
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है। यह मानक समय रेखा भारत के 5 राज्यों क्रमशः उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व आंध्रप्रदेश है।
- कर्क रेखा व मानक रेखा छत्तीसगढ़ राज्य में एक दुसरे को काटती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

भारत की तटीय / समुद्री सीमा = तट रेखा की लम्बाई 7516.6 मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है। कुल राज्य = 9 [i. पश्चिमी तट के राज्य- गुजरात (राज्यों में सबसे लंबी तट रेखा), महाराष्ट्र, गोवा (राज्यों में सबसे छोटी तट रेखा), कर्नाटक व केरल ii. पूर्वी तट के राज्य प. बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु] कुल केंद्र शासित प्रदेश = अंडमान निकोबार (सर्वाधिक), लक्षद्वीप, दमन व दीव तथा (न्यूनतम) पुद्दुचेरी

- भारत के 16 राज्य व 2 केंद्र शासित प्रदेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते है ।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु
• दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) • उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख) • पश्चिमी बिन्दु- गोहर माता (गुजरात) • पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश) • मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख
अफगानिस्तान(1)	लद्दाख
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत - बांग्लादेश सीमा	4096.7 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत – अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

• अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भारत का अक्षांशीय व देशांतरिय विस्तार क्रमशः है-

(A) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पू.दे. से 97°25' पश्चिमी देशान्तर तक
(B) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
(C) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' दक्षिणी आक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
(D) 68°7' उत्तरी अक्षांश से 97°25' उत्तरी आक्षांश तथा 8°4' पूर्वी देशान्तर से 37°6' पूर्वी देशान्तर तक **(B)**

2. कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर गुजरती है?

(A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) 8 **(D)**

3. भारत के किस राज्य की सीमा नेपाल के साथ सीमा नहीं बनाती है?

(A) पश्चिम बंगाल (B) सिक्किम
(C) बिहार (D) हिमाचल प्रदेश **(D)**

4. प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप का अंग था ?

(A) पुष्कर द्वीप (B) जम्बू द्वीप
(C) कांच द्वीप (D) कुश द्वीप **(B)**

5. भारतीय भूभाग का कुल क्षेत्रफल लगभग है-

(A) 32,87,263 वर्ग किमी.
(B) 1269219.34 वर्ग मील
(C) 32,87,263 वर्ग एकड़
(D) A व B दोनों **(D)**

6. भारत और श्रीलंका को अलग करने वाली जलसंधि है-

(A) कुक जलसंधि (B) मलक्का जलसंधि
(C) पाक जलसंधि (D) सुंडा जलसंधि **(C)**

7. किस भारतीय राज्य की सीमा सर्वाधिक राज्यों की सीमा को स्पर्श करती है?

(A) मध्य प्रदेश (B) असम
(C) उत्तर प्रदेश (D) आन्ध्र प्रदेश **(C)**

8. निम्नलिखित प्रमुख भारतीय नगरों में से कौन-सा एक सबसे अधिक पूर्व की ओर अवस्थित है?

(A) हैदराबाद (B) भोपाल
(C) लखनऊ (D) बैंगलुरु **(C)**

9. भारत के किस प्रदेश की सीमाएं तीन देशों क्रमशः नेपाल, भूटान एवं चीन से मिलती हैं?

(A) अरुणाचल प्रदेश (B) मेघालय
(C) पश्चिम बंगाल (D) सिक्किम **(D)**

10. भारत के कितने राज्यों से समुद्र तटरेखा संलग्न हैं?

(A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 10 **(C)**

11. निम्न नगरों में से कौन-सा कर्क रेखा के निकटतम हैं ?

(A) कोलकाता (B) दिल्ली
(C) जोधपुर (D) नागपुर **(A)**

12. निम्नलिखित में से किस द्वीप युग्म को 10 डिग्री चैनल अलग करता हैं ?

(A) दक्षिणी अंडमान तथा लिटिल अंडमान
(B) लक्षद्वीप एवं मिनिकाय
(C) छोटा अंडमान तथा कार निकोबार
(D) पंबन तथा मन्नार **(C)**

13. भारतीय मानक समय (IST) निम्नलिखित स्थानों में से किसके समीप से लिया जाता हैं -

(A) लखनऊ (B) इलाहाबाद (नैनी)
(C) मेरठ (D) मुजफ्फरनगर **(B)**

14. यदि अरुणाचल प्रदेश में सूर्योदय 5.00 बजे प्रातः (IST) पर होता है, तो गुजरात में काण्डला में सूर्योदय किस समय (IST) पर होगा ?

(A) लगभग 6.00 प्रातः
(B) लगभग 5.30 प्रातः
(C) लगभग 7.00 प्रातः
(D) लगभग 7.30 प्रातः **(C)**

Q.4. निम्नलिखित समूहों में कौन सा पूर्व से पश्चिम की ओर पर्वत शिखरों का सही कम हैं ?

(A) कंचनजंगा, एवरेस्ट, अन्नपूर्णा, धौलागिरि

(B) एवरेस्ट, कंचनजंगा, अन्नापूर्णा, धौलागिरि

(C) कंजनजंगा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा, एवरेस्ट

(D) एवरेस्ट, कंचनजंघा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा

उत्तर :-**(A)**

Q.5. लघु हिमालय स्थित हैं मध्य में –

(A) शिवालिक और महान हिमालय

(B) ट्रांस हिमालय और महान हिमालय

(C) ट्रांस हिमालय और शिवालिक

(D) शिवालिक और बाह्य हिमालय

उत्तर :- **(A)**

Q.6. निम्नलिखित में से उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर के सही क्रम वाली पर्वत श्रेणी कौन-सी हैं ?

(A) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

(B) जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

(C) कारकोरम पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी

(D) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

उत्तरः- **(C)**

Q.7. निम्नलिखित पर विचार कीजिए –

1. अरावली की पहाड़ियाँ

2. सह्याद्रि पर्वत श्रेणी

3. सतपुड़ा पर्वत श्रेणी

उपरोक्त का उत्तर से दक्षिण की ओर सही अनुक्रम कौनसा हैं ?

(A) 2,1,3 (B) 1,2,3

(C) 1,3,2 (D) 2,3,1

उत्तरः- **(C)**

अध्याय – 4

भारत का अपवाह तंत्र एवं मृदा

भारत नदियों का देश हैं । भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं । नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही हैं ।

- भारत में 4000 से भी अधिक छोटी व बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहत् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैं ।
- किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं। कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजाल (Drainage Network) कहते है ।

अपवाह व अपवाह तंत्र (Drainage and Drainage System)

निश्चित वाहिकाओं (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता हैं ।

जलग्रहण क्षेत्र (Catchment Area)-

एक नदी विशिष्ट क्षेत्र से अपना जल बहाकर लाती है जिसे जलग्रहण क्षेत्र कहते हैं ।

अपवाह द्रोणी –

एक नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को अपवाह क्षेत्र कहते है ।

जल संभर क्षेत्र / Wateshad area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया हैं

1. प्रमुख नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग किलोमीटर से अधिक हैं । इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ शामिल हैं । जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती , बराक आदि ।
2. मध्यम नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर के बीच हैं । इसमें 44 नदी श्रेणिया हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि ।
3. लघु नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग किलोमीटर से कम हैं । इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों मे बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं

भारत का अपवाह तंत्र

- **उद्गम के आधार पर**
  - **हिमालय से निकलने वाली नदियाँ**
    1. सिन्धु नदी तंत्र
    2. गंगा नदी तंत्र
    3. ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र
  - **प्रायःद्वीपीय भारत की नदियाँ**
    1. गोदावरी
    2. महानदी
    3. कृष्णा
    4. कावेरी
    5. नर्मदा
    6. ताप्ती
    7. पेन्नार
    8. वैगई
    9. शरावती
- **समुन्द्र में जल विसर्जन के आधार पर**
  - **अरब सागरीय नदियाँ**
    1. सिन्धु
    2. माही
    3. नर्मदा
    4. ताप्ती
    5. पेरियार
    6. मांडवी
    7. जुआरी
    8. शरावती
  - **बंगाल की खाड़ी**
    1. गंगा
    2. यमुना
    3. कृष्णा
    4. कावेरी
    5. गोदावरी
    6. महानदी
    7. पेन्नार
    8. वैगई
    9. बराक
    10. चम्बल
    11. दामोदर
- **जल संभर के आधार पर**

अपवाह प्रवृत्ति

1. पूर्ववर्ती अथवा प्रत्यानुवर्ती अपवाह –

- वे नदियाँ, जो हिमालय पर्वत के निर्माण के पूर्व प्रवाहित होती थी तथा हिमालय के निर्माण के पश्चात् महाखण्ड़ बनाकर अपने पूर्व मार्ग से प्रवाहित होती हैं। जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिन्धु ।

2. अनुवर्ती नदियाँ –

- वे नदियाँ, जो सामान्य ढाल की दिशा में बहती हैं।। प्रायद्वीपीय भारत की अधिकतर नदियाँ अनुवर्ती नदियाँ हैं ।

3. परवर्ती नदियाँ –

- चम्बल, सिंध, बेतवा, सोन आदि नदियाँ गंगा और यमुना में जाकर समकोण पर मिलती हैं । गंगा अपवाह तंत्र के परवर्ती अपवाह का उदाहरण हैं ।

4. द्रुमाकृतिक अपवाह –

- वह अपवाह जो शाखाओं में फैला हो, जो द्विभाजित हो तथा वृक्ष के समान प्रतीत हो उसे द्रुमाकृतिक अपवाह कहते हैं ।

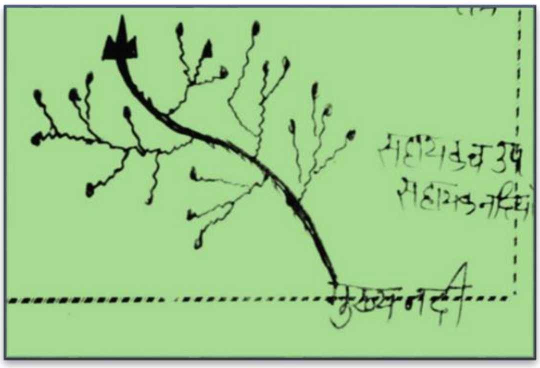

5. जालीनुमा अपवाह –

- यह एक आयताकार प्रतिरूप हैं । जहाँ मुख्य नदियाँ एक दूसरे के समान्तर बहती हैं और सहायक नदियाँ समकोण पर पायी जाती हैं ।

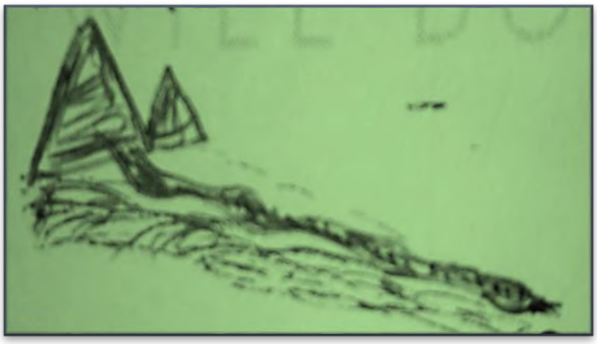

6. कंटकीय प्रतिरूप –

- जब नदी के ऊपरी भाग में ऐसी सहायक जलधाराएँ मिलती है , जिनकी प्रवाह की दिशा मुख्य नदी के विपरीत हुआ करती हैं , तो ऐसे प्रतिरूप कंटकीय प्रतिरूप (Thorny Pattern) कहलाता है | उदाहरण – सिन्धु एवं ब्रह्मपुत्र नदियाँ अपने ऊपरी भाग में इसका निर्माण करती हैं

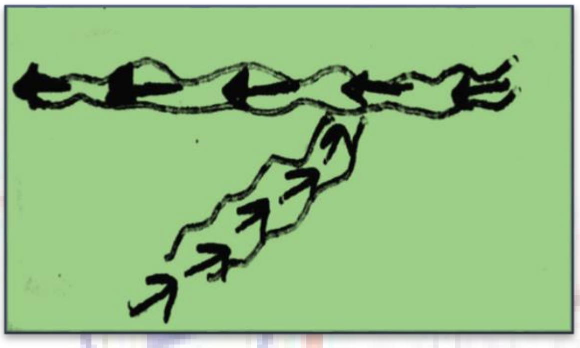

7. आयताकार अपवाह –

- वह अपवाह प्रतिरूप, जिसकी विशेषता सहायक नदियों एवं मुख्य नदी के बीच समकोणीय घुमाव एवं समकोणीय सम्मिलन हैं ।

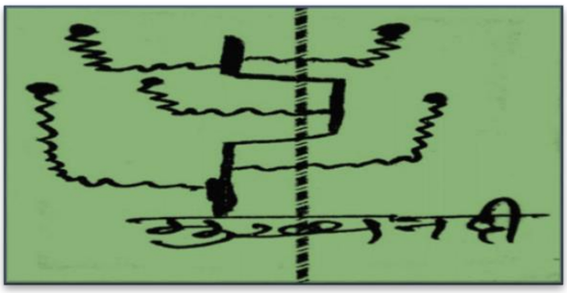

8. अरीय प्रतिरूप –

- इस अपवाह प्रतिरूप में किसी केन्द्रीय स्थान से नदियों का बहिर्गमन होता हैं, इस प्रतिरूप में शीर्ष भाग से नदियाँ निकलकर चारो दिशाओं में प्रवाहित होती हैं।
  उदाहरण – पारसनाथ की पहाड़ी, अमरकंटक की पहाड़ी

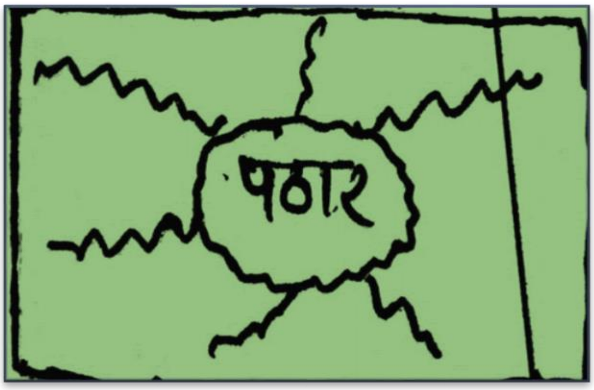

9. वलयाकार प्रतिरूप –

- इस प्रकार के अपवाह प्रतिरूप में, पर्वर्ती नदियाँ अनुवर्ती नदी से जुड़ने से पहले वक्र अथवा चापाकार मार्ग से होकर गुजरती हैं । यह आंशिक रूप से भूमिगत वृत्ताकार संरचना के अनुकूलन का परिणाम हैं ।

हिमालयी अपवाह तंत्र

- हिमालय से निकलने वाली नदियाँ बर्फ़ और ग्लेशियरों(हिमानी या हिमनद) के पिघलने से बनी हैं अत: इनमें पूरे वर्ष के दौरान निरन्तर प्रवाह बना रहता है। हिमालय की नदियों के बेसिन बहुत बड़े हैं एवं उनके जलग्रहण क्षेत्र सैकड़ों-हजारों वर्ग किमी. में फैले हैं। हिमालय की नदियों को तीन प्रमुख नदी-तंत्रों में विभाजित किया गया है।
- उत्तर भारत के अपवाह तंत्र में हिमालय का अधिक महत्त्व हैं ।
- ये नदियाँ तीव्र गति से अपनी घाटियों को गहरा कर रही हैं ।
- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं । इन्ही नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।
- इस क्षेत्र की नदियाँ बारहमासी (Prennial) हैं क्योंकि ये वर्षण एवं बर्फ पिघलने दोनों क्रियाओं से जल प्राप्त करती हैं । ये नदियाँ गहरे महाखण्डों से गुजरती हैं । जो हिमालय के उत्थान के साथ - साथ होने वाली अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित हैं ।

प्रश्न:- निम्न वक्तव्यों पर विचार कर सही उत्तर का चयन कीजिए :

कथन (A) : हिमालय से निकलने वाली नदियाँ सतत वाहिनी हैं ।

रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया हैं ।

सिन्धु की प्रमुख सहायक नदियाँ : -

1. सतलुज नदी 2. व्यास नदी
3. रावी नदी 4. चिनाब नदी
5. झेलम नदी

सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जल संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलुज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -

1.व्यास, रावी, सतलुज 80% पानी भारत
20% पानी पाकिस्तान

2.सिन्धु, झेलम, चिनाब 80% पानी पाकिस्तान
20% पानी भारत

सतलज नदी -

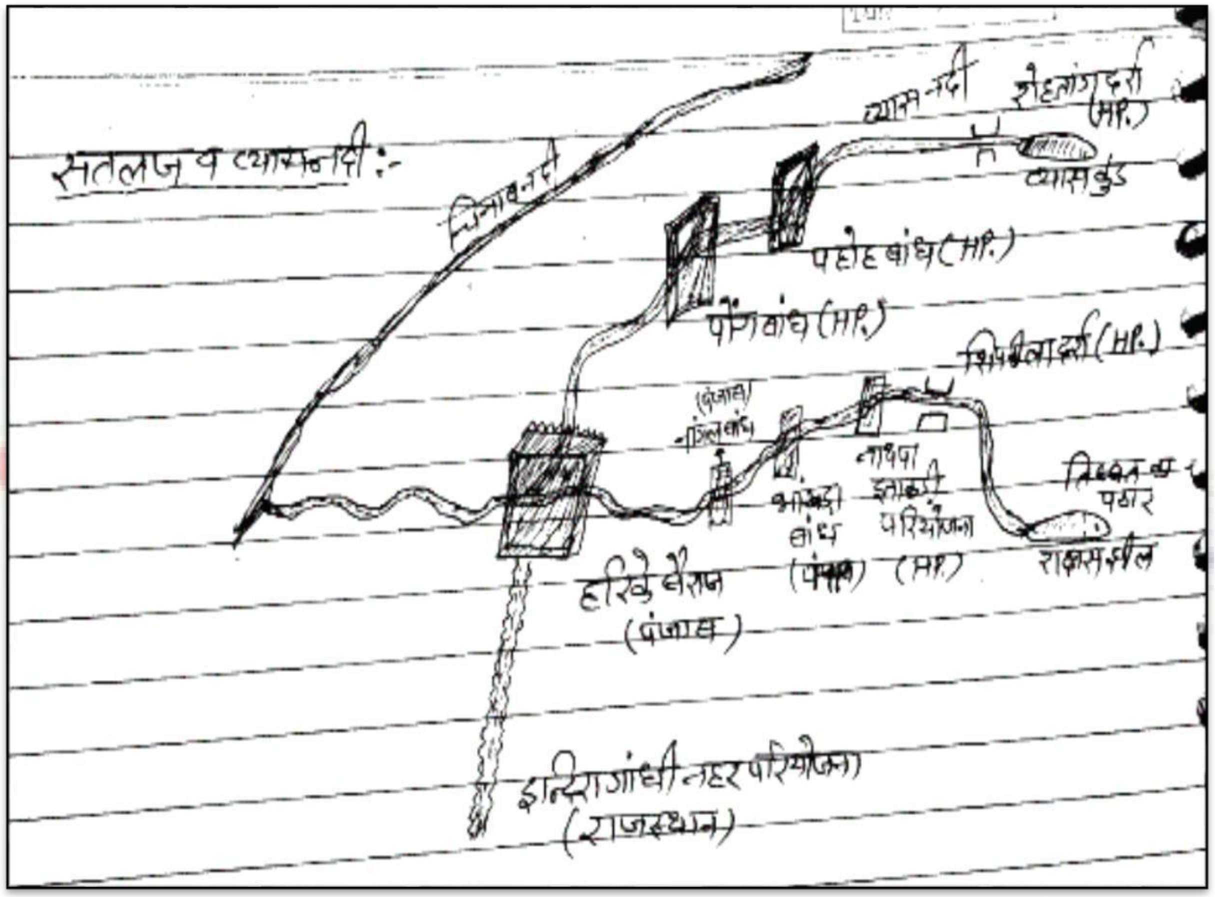

यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं जो तिब्बत में लगभग 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राक्षस ताल झील से निकलती हैं । जहाँ इसे **लॉगचेन खंबाब** के नाम से जाना जाता हैं ।

- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंड़ो - तिब्बत सीमा के समीप **शिपकी ला दर्रे** के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहते हुए अंत में चिनाब नदी में मिल जाती हैं ।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं।
- इस नदी पर हिमाचल प्रदेश में नाथपा झाकड़ी परियोजना तथा भाखड़ा बाँध व इसके पीछे गोविन्द साग़र जलाशय तथा पंजाब के रोपड़ में नांगल बाँध बना हुआ है।

व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं। रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड़ से निकलती हैं।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती हैं । तथा धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड़ का निर्माण करती हैं ।
- यह पंजाब के मैंदान में प्रवेश करती है जहाँ हरिके बैराज के पास सतलुज नदी में जा मिलती है ।

रावी नदी (परुष्णी नदी)

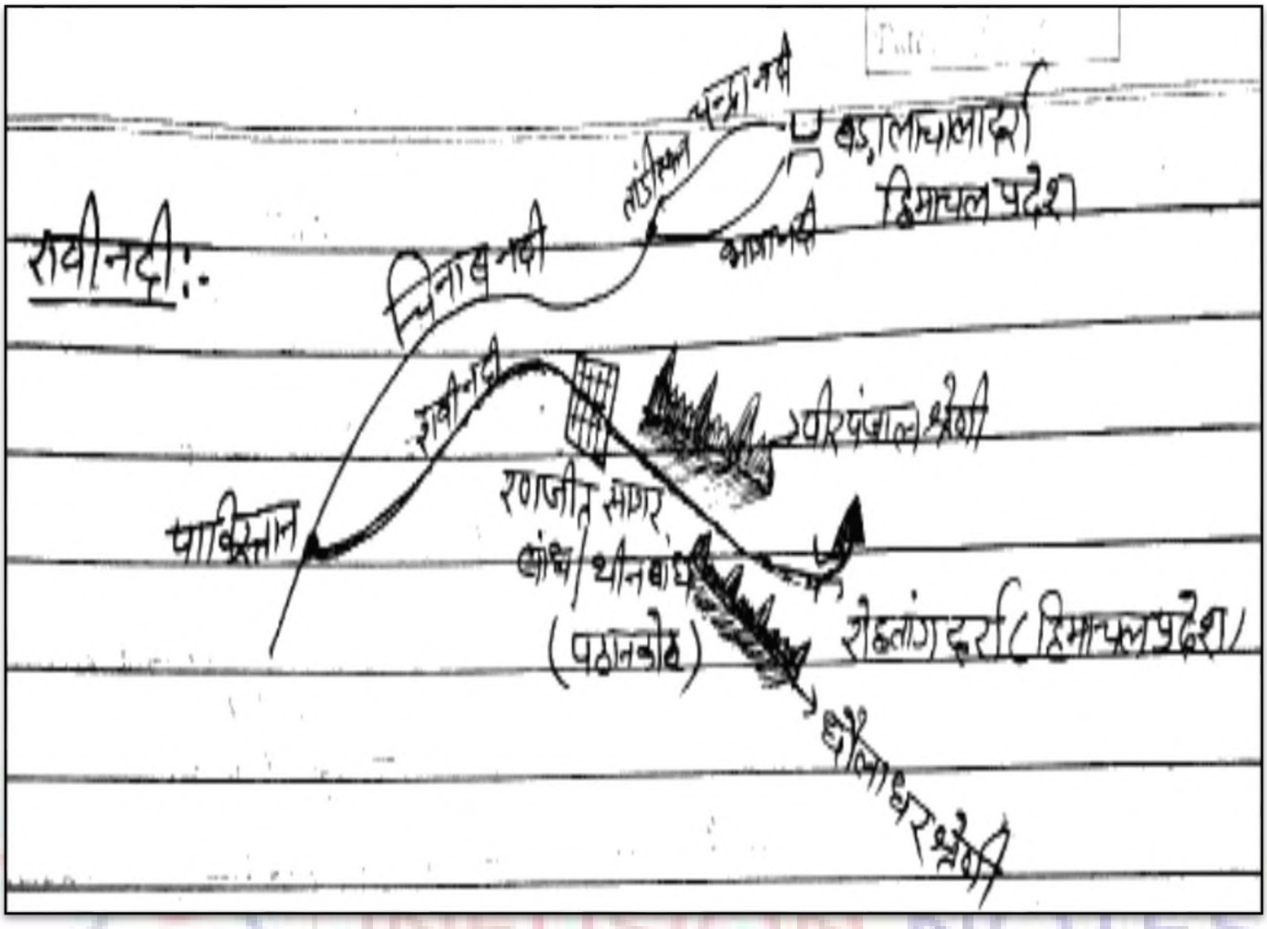

यह नदी सिन्धु की अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं जो हिमालय की कुल्लू की पहाड़ियों में स्थित रोहतंग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती हैं ।

- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती हैं ।
- इस नदी पर पठानकोट(पंजाब) के निकट थीन बाँध / रणजीत सागर बाँध बना हुआ है ।

चिनाब नदी (अस्क्नि)

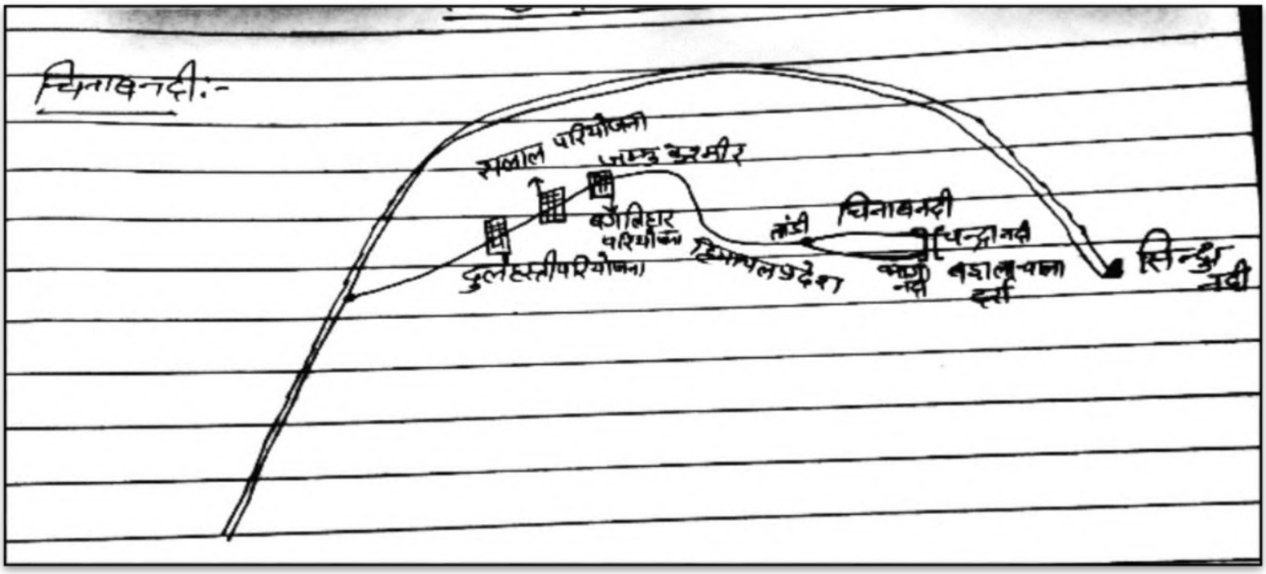

- दक्षिण में सतपुड़ा व उत्तर मे विंध्याचल के मध्य यह भ्रंश घाटी में बहती हुई जबलपुर में भेडा घाट की संगमरमर की चट्टानों में धुंआधार जल प्रपात बनाती है ।
- अंत में यह भड़ौच के दक्षिण में अरब सागर में गिरती है तथा ज्वारनदमुख का निर्माण करती है।
- यह अरब सागर में जल गिराने वाली नदियों में सबसे लम्बी (1312 किलोमीटर) नदी है
- यह मध्यप्रदेश व गुजरात में प्रवाहित होती है।
- सरदार सरोवर परियोजना इसी नदी पर है ।

ताप्ती (तापी) नदी –

- इसकी उत्पत्ति मध्यप्रदेश के महादेव पहाड़ी के पास बेतुल जिलें के मुलताई से निकलती है
- सतपुडा श्रेणी व अजंता श्रेणियों के बीच भ्रंश घाटी में बहते हुए सूरत शहर के आगे खम्भात की खाड़ी में अपना जल गिराती हैं।
- सुरत में इस नदी पर उकई बाँध बना हुआ है।
- इसकी द्रोणी मध्यप्रदेश, गुजरात , महाराष्ट्र है।

साबरमती नदी – यह उदयपुर जिलें (राजस्थान) के पास अरावली श्रेणी से निकलती है तथा खम्भात की खाड़ी मे अपना जल गिराती है।

- गांधीनगर व अहमदाबाद इस नदी के तट पर स्थित है।

माही नदी – इसका उद्गम मध्य प्रदेश में विंध्य श्रेणी के पश्चिम से हुआ है।

- यह तीन राज्यों में मध्य प्रदेश, राजस्थान व गुजरात में प्रवाहित होते हुए अपना जल खम्भात की खाडी में गिराती है।
- यह कर्क रेखा को दो बार काटती है।

माण्डवी - इसका उद्गम कर्नाटक राज्य में बेलगांव जिले से होता है।

- यहां से कर्नाटक व गोवा राज्यों में बहने के बाद ज्वारनदमुख बनाते हुए अरब सागर में गिर जाती है।
- मांडवी नदी पर कर्नाटक राज्य में वज्रपोहा जलप्रपात एवं कर्नाटक व गोवा राज्यों की सीमा पर दूधसागर जलप्रपात निर्मित है।

जुआरी – इसका उद्गम गोवा राज्य में हेमद बार्शम स्थान से होता है।

- यहां से गोवा राज्य में बहते हुए ज्वारनदमुख का निर्माण करते हुए अरब सागर में जाकर गिर जाती है।
- जुवारी नदी के किनारे गोवा राज्य का वास्कोडिगामा नगर स्थित है।

शरावती नदी – यह कर्नाटक के शिमोगा जिले से निकलती है।

- भारत का सबसे ऊँचा गरसोप्पा (जोग) जल प्रपात इसी नदी पर है।

पेरियार नदी – यह केरल राज्य की सबसे लम्बी नदी है।

- इसका उद्गम शिवगिरी की पहाड़ियों केरल से से होता है। तथा वेंम्बानाद झील के उत्तर में अपना जल अरब सागर में गिराती है।
- इस नदी को हाथियों की नदी भी कहते है ।

भरतपूझा नदी –

- यह भी अन्नामलाई की पहाड़ियों से निकलती है।
- यह केरल की दूसरी सबसे बड़ी नदी है
- इसे 'पोंनानी ' के नाम से भी जानते हैं।

1. **हिमालय तथा प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र में विशेषताएँ एवं अंतर :-**

हिमालयन अपवाह तंत्र	**प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र**
• इस अपवाह तंत्र में हिमालय से निकलने वाली नदियाँ तथा उसकी सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं ।	• इस अपवाह तंत्र में प्रायद्वीप से निकलने वाली नदियाँ तथा उसकी सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं ।
• इस तंत्र की नदियाँ हिमनद एवं वर्षा से जल प्राप्त करती हैं , अतः यहाँ की नदियाँ सदा वाहिनी हैं।	• यहाँ की नदियाँ केवल वर्षा से जल प्राप्त करती हैं, अतः यह नदियाँ मौसमी हैं ।
• यह नदियाँ नवीन वलित पर्वतीय क्षेत्र से बहती हैं, अतः ये युवा अवस्था में हैं ।	• इस अपवाह तंत्र की नदियाँ पठारी क्षेत्र से बहती हैं, अतः ये नदियाँ वृद्धावस्था में हैं ।
• इस तंत्र की नदियों की अपरदन क्षमता अधिक है ।	• इन नदियों की निक्षेपण क्षमता अधिक हैं ।

• इस तंत्र की नदियाँ गहरी आकार की घाटी गार्ज तथा कैनियन का निर्माण करती हैं ।	• इस तंत्र की नदियाँ चौड़ी घाटी का निर्माण करती हैं ।
• इस तंत्र नदियों के पास अवसादों की मात्रा अधिक पाई जाती है , अतः यह विस्तृत मैदान का निर्माण करती है ।	• इस तंत्र की नदियों के पास अवसादों की मात्रा कम होती है, अतः सीमित मैदान का निर्माण करती हैं।
• इस तंत्र की नदियों के अपवाह का तल जलोढ़ अवसादों से बना है ।	• इस तंत्र की नदियों के अपवाह का तल कठोर चट्टानों से बना है ।
• ये नदियाँ विशाल मैदानी क्षेत्र में विसर्पण करती हैं ।	• ये नदियाँ केवल डेल्टा क्षेत्र में विसर्पण करती हैं ।
• यहाँ की बहुत सी नदियाँ पूर्ववर्ती हैं । क्योंकि इन नदियों का निर्माण हिमालय के निर्माण से पूर्व हो चुका था ।	• यहाँ की सभी नदियाँ अनुवर्ती हैं । क्योंकि इन नदियों का उद्गम प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र के निर्माण के बाद हुआ था ।
• यहाँ की नदियाँ लम्बी हैं ।	• यहाँ की नदियाँ लम्बाई में कम हैं ।
• इन नदियों के पास जल की मात्रा अधिक है, तथा यह गहरी घाटियों से बहती है , अतः इनकी जल विद्युत उत्पादन क्षमता अधिक है परन्तु इनकी क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं हो पाता है ।	• इन नदियों में जल की मात्रा सीमित है, तथा यह कम गहरी घाटियों से बहती है । अतः इनकी जल विद्युत उत्पादन क्षमता कम है । परन्तु इनकी पूर्ण क्षमता का उपयोग किया जा चुका है ।
• इस तंत्र की नदियाँ विस्तृत मैदान में बहती हैं । अतः यह नौवहन के लिए अधिक उपयोगी हैं ।	• इस तंत्र की नदियाँ पठारी क्षेत्र से बहती हैं , अतः ये नौवहन के लिए कम उपयोगी है । केवल इनके डेल्टा क्षेत्र में नौवहन की जा सकता है ।

डेल्टा और ज्वारनदमुख में अन्तर :-

डेल्टा	ज्वारनदमुख
1. यह एक त्रिभुजाकार भू-आकृति होती हैं ।	1. जबकि ज्वारनदमुख का निर्माण नदी के मुहाने पर गहरी संकरी घाटी के रूप में होता है ।
2. समुद्र में गिरते समय जब नदी विभिन्न उपशाखाओं में विभाजित हो जाती हियो तो डेल्टा का निर्माण करती हैं ।	2. जबकि समुद्र में गिरते समय नदी की धारा उपधाराओं में विभाजित न होकर एक ही धारा के रूप में गिरती है, तो ज्वारनदमुख का निर्माण होता है ।
3. डेल्टाओं का निर्माण महासागर के निम्न ज्वार वाले क्षेत्रों में होता है ।	3. जबकि ज्वारनदमुखों का निर्माण उच्च ज्वार वाले क्षेत्रों में होता है ।
4. डेल्टा उपजाऊ भूमि होते हैं, जो कृषि गतिविधियों के लिए उपयुक्त होते हैं ।	4. जबकि ज्वारनदमुख पोषक तत्वों से युक्त जल क्षेत्र होते हैं । और इन क्षेत्रों में मछली पकड़ने का कार्य किया जाता है ।
5. भारत की बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ डेल्टाओं का निर्माण करती हैं । जैसे- गंगा नदी, ब्रह्मपुत्र नदी गोदावरी नदी आदि ।	5. जबकि अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं । जैसे – साबरमती नदी, माही नदी, नर्मदा, ताप्ती नदी आदि ।

विद्यालय का संचालन पद्मश्री सुश्री सुधा वर्गीज द्वारा किया जा रहा है।

6. सामाजिक जागरूकता अभियान :- बिहार महादलित विकास मिशन एवं महिला विकास निगम के सहयोग से सभी 9466 विकास मित्र क्षेत्र में दहेज एवं बाल विवाह के संबंध में समुदाय में जागरूकता फैलाने हेतु प्रत्येक विकास मित्र के क्षेत्र में 3 किशोरी एवं 1 किशोर समूह अर्थात् कुल 4 किशोर / किशोरी समूह का गठन किया जाना है। इस कार्य हेतु महिला विकास निगम के सहयोग से प्रशिक्षण दिया गया है। बिहार महादलित विकास मिशन के द्वारा ऑनलाइन रिपोर्टिंग पोर्टल लाँच किया गया है, जिसपर सीधे विकास मित्र द्वारा समूह गठन के संबंध में प्रतिवेदन अपलोड किए जा रहे हैं।

अध्याय- 6

बिहार में वन, वन संपदा तथा वन्य जीव अभ्यारण्य

- बिहार राज्य का अधिकांश क्षेत्रफल मैदानी है।
- अत्यधिक जनसंख्या घनत्व और कृषि भूमि पर दबाव के कारण प्राकृतिक वनस्पति, पर्यावरण के अनुकूल नहीं है।
- बिहार में अधिकांश वर्षा मानसूनी जलवायु के कारण होती है, अतः यहाँ वनस्पति के निर्धारण में वर्षा की मात्रा एक प्रमुख कारक है।

बिहार में वर्षा की मात्रा के आधार पर प्राकृतिक वनस्पति को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:-

1. आर्द्र पर्णपाती वन
2. शुष्क पर्णपाती वन
3. आर्द्र पर्णपाती वन

वह क्षेत्र जहाँ 120 Cm से अधिक वार्षिक वर्षा होती है उन क्षेत्रों में आर्द्र पर्णपाती वन पाए जाते है।

इन्हे मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया गया है-

1. सोमेश्वर एवं दून श्रेणी के वन
2. तराई क्षेत्र का वन

सोमेश्वर एवं दून श्रेणी के वन

- यह वन मुख्यतः पश्चिमी चंपारण में पाए जाते है।
- इस क्षेत्र में वर्षा की मात्रा 160 CM से अधिक होती है।
- उच्च भूमि और पहाड़ी ढालों पर पाए जाने वाले आर्द्र पर्णपाती वनों के प्रमुख वृक्ष शाल , शीशम, खैर, सेमल, तून आदि हैं।
- ऊँचाई के कारण इन क्षेत्रों में सवाना प्रकार की वनस्पति भी पाई जाती है।

तराई क्षेत्र का वन

- यह वन तराई क्षेत्र बिहार के उत्तरी-पश्चिमी तथा उत्तरी-पूर्वी भागों में पाए जाते है।
- यह वन बिहार के पूर्णिया, सहरसा, अररिया एवं किशनगंज आदि जिलों में एक संकीर्ण पट्टी के रूप में विस्तृत है।
- तराई क्षेत्र के वनों की प्रमुख वनस्पतियाँ नरकट, झाड़, बाँस, घास, हाथी घास, सवई आदि हैं।

- इस प्रकार की वनस्पति मुख्यतः निम्न दलदली भूमि में पाई जाती है।

शुष्क पर्णपाती वन

- वह वन क्षेत्र जहाँ 120 Cm से कम वार्षिक वर्षा होती है उन क्षेत्रों में शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं।
- इन वनों में मुख्यतः झाड़ी, घास तथा छोटे-छोटे पौधे पाए जाते हैं।
- शुष्क पर्णपाती वनों का विकास बिहार के पूर्वी मध्यवर्ती भाग और दक्षिणी पठार के पश्चिमी भाग में हुआ है।
- शुष्क पर्णपाती वनों के प्रमुख वृक्ष शीशम, महुआ, खैर, पलाश, आसन, आँवला, अमलतास, आबनूस आदि हैं।

बिहार में वनों के संरक्षण के लिए इन्हे 3 वर्गों में विभाजित किया गया है –

1. सुरक्षित वन
2. आरक्षित वन
3. अवर्गीकृत वन

सुरक्षित वन के अंतर्गत पशुओं को चराने तथा लकड़ी काटने व एकत्रित करने की अनुमति नहीं होती है, तथा इन्हें सरकारी संरक्षण में रखा जाता है।

आरक्षित वन के अंतर्गत पशुओं को चराने एवं सीमित मात्रा में लकड़ी काटने एवं एकत्रित करने की अनुमति सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं।

अवर्गीकृत वन में पशुओं को चराने तथा लकड़ी काटने के लिए सरकार द्वारा कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाता है, लेकिन इसके लिए शुल्क लिया जाता है।

बिहार में वन आवरण

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार बिहार का वनावरण 7380.79 वर्ग कि. मी. है। जो बिहार के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 7.84% है। 2019 कि रिपोर्ट कि तुलना में बिहार में वनावरण में 75 वर्ग कि. मी. कि वृद्धि हुई, जो पिछली रिपोर्ट से 1.03% अधिक है।

13 जनवरी, 2022 को केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने 17वीं भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2021 जारी की।

वर्ष 2019 एवं वर्ष 2021 के अनुसार वन स्थिति

वर्ग	क्षेत्रफल 2019	क्षेत्रफल 2021
बहुत घने वन (VDF)	333 वर्ग कि. मी.	333 वर्ग कि. मी.
माध्यम वर्ग से घने वन (MDF)	3280 वर्ग कि. मी.	3286 वर्ग कि. मी.
खुला वन (OF)	3693 वर्ग कि. मी.	3762 वर्ग कि. मी.
कुल	7306 वर्ग कि. मी.	7381 वर्ग कि. मी.

प्रतिशत के अनुसार सर्वाधिक वन आवरण वाले जिले

जिले	प्रतिशत
कैमूर	31.56%
जमुई	21.34%
नवादा	20.72%

प्रतिशत के अनुसार सबसे कम वन आवरण वाले जिले

जिले	प्रतिशत
शेखपुरा	0.17%
बक्सर	0.35%
सिवान	0.35%

क्षेत्रफल के अनुसार सर्वाधिक वन आवरण वाले जिले

जिले	क्षेत्रफल	प्रतिशत
कैमूर	1051.56 वर्ग किमी	31.56%
पश्चिम चम्पारण	903.34 वर्ग किमी	17.28%
रोहतास	669.91 वर्ग किमी	17.26%

क्षेत्रफल के अनुसार सबसे कम वन आवरण वाले जिले

जिले	क्षेत्रफल	प्रतिशत
शेखपुरा	1.19 km2	0.17%
अरवल	4.14 km2	0.65%
जहानाबाद	4.43 km2	0.48%

बिहार में वृक्षावरण

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार बिहार के 2341 km2 क्षेत्रफल पर वृक्षावरण है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल को 2.48% है। 2019 के रिपोर्ट कि तुलना में वृक्षावरण में 338 वर्ग किमी की वृद्धि पायी गयी है।

बिहार में वन एवं वृक्षावरण

वर्ग	क्षेत्रफल 2021	प्रतिशत	वृद्धि
वनावरण	7381 वर्ग किमी	7.84%	75 वर्ग किमी
वृक्षावरण	2341 वर्ग किमी	2.18%	338 वर्ग किमी
कुल	9722 वर्ग किमी	10.32%	413 वर्ग किमी

वनावरण में 2019 के रिपोर्ट कि तुलना 2021 में सर्वाधिक वृद्धि करने वाले जिलें

जिले	क्षेत्रफल (वृद्धि)
बांका	16.29 वर्ग किमी
जमुई	13.22 वर्ग किमी
गया	12.24 वर्ग किमी

वनावरण में 2019 के रिपोर्ट कि तुलना 2021 में सर्वाधिक कमी करने वाले जिलें

जिले	क्षेत्रफल
कैमूर	4.83 वर्ग किमी
सुपौल	4.46 वर्ग किमी
रोहतास	2.32 वर्ग किमी

वन्य जीव अभयारण्य

- भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा भारत में वन्य जीव-जंतु संरक्षण हेतु योजनाओं का क्रियान्वयन एवं निर्देशन किया जाता है।
- इसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं। वन्य जीवन (सुरक्षा) अधिनियम, 1972 में वन्य जीवन के संरक्षण एवं विलुप्त होती जा रही प्रजातियों के संरक्षण के लिए दिशा-निर्देश दिए गए हैं।
- इस अधिनियम के अंतर्गत दुर्लभ और ख़त्म होती जा रही प्रजातियों के व्यापार पर प्रतिबन्ध है।

  बिहार राज्य सरकार द्वारा वन्य जीव-जंतु, पक्षी एवं पर्यावरण के संरक्षण के लिए 13 क्षेत्रों को पर्यावरणीय संवेदनशील क्षेत्र घोषित किया गया है।

  पर्यावरणीय संवेदनशील क्षेत्र के अंतर्गत वन्य प्राणी अभयारण्य की सीमा से 2 किलोमीटर तक का वन क्षेत्र शामिल किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय के मापन की विधि नहीं है -
(A) उत्पादन - योग विधि
(B) आय विधि
(C) निवेश विधि
(D) व्यय विधि **(C)**

2. राष्ट्रीय आय निकालने के लिए NNP में से किसे घटाया जाता है ?
(A) अप्रत्यक्ष कर
(B) पूँजी उपभोग छूट
(C) इमदाद (Subsidy)
(D) ब्याज **(A)**

3. भारत में सकल घरेलू उत्पाद की गणना का काम किस मंत्रालय के द्वारा कराया जाता है?
(A) वित्त मंत्रालय
(B) वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा
(C) केन्द्रीय सांख्यिकीय एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
(D) गृह मंत्रालय **(C)**

4. भारत में प्रति व्यक्ति आय की गणना करने के लिए ....आधार वर्ष है
(A) 2004-05
(B) 2011-12
(C) 2001-2002
(D)2014-15 **(B)**

5. यदि किसी देश की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान घट रहा है तो इसका क्या मतलब निकाला जा सकता है?
(A) देश विकसित बनने की दिशा में बढ़ रहा है
(B) देश अल्प विकसित बनने की दिशा में बढ़ रहा है।
(C) कोई मतलब नही निकाला जा सकता है
(D) देश की आर्थिक वृद्धि दर रुक गयी है **(A)**

अध्याय – 3

बैंकिंग

- बैंक उस वित्तीय संस्था को कहते हैं, जो जनता की धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती है।
- लोग अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने हेतु इन संस्थाओं में जमा करते हैं और आवश्यकता अनुसार समय-समय पर निकालते रहते हैं।
- बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों एवं व्यवसायियों को ऋण देकर ब्याज कमाते हैं।

भारत में बैंकिंग

- भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770ई. में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बन्द हो गई।
- इसके बाद देश में निजी और सरकारी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेंन्सी बैंकों की स्थापना की गई - वर्ष 1806 में बैंक ऑफ बंगाल (Bank of Bengal.) , वर्ष 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे (Bank of Bombay) तथा वर्ष 1843 में बैंक ऑफ मद्रास (Bank of Madras) ।
- इन तीनों बैंकों पर बैंक ऑफ मद्रास अपना नियंत्रण रखती थी । बाद में इन बैंकों के कार्यों को सीमित कर दिया गया । वर्ष 1921 में इन तीनों बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (Impe rial Bank of India) की स्थापना की गई और । जुलाई, 1955 को राष्ट्रीयकरण के उपरान्त इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया ।
- भारत में पहली सीमित देयता वाला भारतीय बैंक अवध कमर्शियल बैंक था जिसकी स्थापना फैजाबाद में वर्ष 1881 में की गयी थी ।
- उसके बाद वर्ष 1894 में लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई जो पहला पूर्ण रूप से प्रथम भारतीय बैंक था ।

भारत में स्थापित प्रमुख बैंक व उनकी स्थापना

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान	1770

बैंक ऑफ बंगाल	1806
बैंक ऑफ बॉम्बे	1840
बैंक ऑफ मुद्रास	1843
इलाहाबाद बैंक	1865
एलाइन्स बैंक ऑफ शिमला	1881
अवध कॉमर्शियल बैंक	1881
पंजाब नेशन बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बडौदा	1909
सेंण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

भारतीय रिजर्व बैंक

- भारत का केन्द्रीय बैंक है ।
- वर्ष 1930 में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति की सिफारिश के आधार पर भारत के केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (R.B.I.) की स्थापना RBI अधिनियम, 1934 के तहत् । अप्रैल , 1935 को 5 करोड़ रुपये की अधिकृत पूँजी से हुई थी ।
- 1 जनवरी, 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया । इसके प्रथम गवर्नर सर ओसबोर्न स्मिथ (1935-37) थे ।
- देश के स्वतंत्रता के समय में RBI के गर्वनर सर सी डी . देशमुख (1943-49) थे ।
- रिजर्व बैंक के कार्यों का संचालन केन्द्रीय संचालक मण्डल (Central Borad of Directors) द्वारा होता है।
- सम्पूर्ण देश में इसे चार भागों में बाँटा गया है - उत्तरी क्षेत्र , दक्षिणी क्षेत्र , पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र ।
- इसमें प्रत्येक के लिए 5 सदस्यों का एक स्थानीय बोर्ड (Local board) होता है ।
- केन्द्रीय बोर्ड में । गवर्नर तथा अधिक से अधिक 4 डिप्टी गवर्नर होते हैं, जिनकी नियुक्ति केन्द्र सरकार पाँच वर्षों के लिए करती है ।
- वर्तमान में RBI के 25वें गवर्नर शक्तिकांत दास (12 दिसम्बर, 2018 से लगातार) है।
- स्थानीय बोर्डों के कार्यालय नई दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता और मुम्बई में है ।
- स्थानीय बोर्ड केन्द्रीय बोर्ड के आदेशानुसार कार्य करते हैं ।
- रिजर्व बैंक का प्रधान अथवा केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई में स्थित है ।
- नई दिल्ली, कोलकाता तथा चेन्नई में स्थानीय प्रधान कार्यालय है

RBI के कार्य

भारत में नए नोट जारी करने की व्यवस्था

- एक रुपये के नोट का सभी सिक्कों को छोड़कर रिजर्व बैंक को विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों को जारी करने का एकाधिकारक प्राप्त है ।
- रिजर्व बैंक सरकार के प्रतिनिधि के रूप में एक रुपए के नोटों तथा सिक्कों एवं छोटे सिक्कों का देश में वितरण का कार्य करता है ।
- करेन्सी नोट जारी करने के लिए वर्तमान में रिजर्व बैंक नोट प्रचालन की न्यूनतम निधि पद्धति (Minimum Reserve System) को अपनाता है। इस पद्धति के अंतर्गत रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण एवं विदेशी ऋणपत्र कुल मिलाकर किसी भी समय 200 करोड़ रुपये के मूल्य से कम नहीं होने चाहिए। इनमें स्वर्ण का मूल्य (धातु तथा मुद्रा मिलाकर) 115 करोड़ रुपए से कम नहीं होना चाहिए । यह पद्धति रिजर्व बैंक ने 1957 के बाद अपनाई थी ।

- **NOTE**-नए नोट छापने की एक अन्य व्यवस्था भी हैं परन्तु इसका प्रयोग भारत में नहीं होता यह व्यवस्था अनुपाती आरसी व्यवस्था है (Prahetional Resere system) इसके अन्तर्गत जिस अनुपात में नए नोट का मूल्य बढ़ता हैं उसी अनुपात में रखे गए कोष को बढाना पड़ता है

➢ **NOTE** – 1000 रुपये के नोटों का परिचालन 8 नवम्बर, 2016 से बंद हो गया है।

NOTE- सिक्के सीमित विधि ग्राह्य (Limited Legal Tender) है। भारत में कागजी नोट असीमित विधि ग्राह्य (Unlimited Le gal Tender) है। इसका अर्थ यह है कि भुगतान का निपटारा करने के लिए सिक्कों का प्रयोग केवल एक सीमा तक ही किया जा सकता है। इसके विपरीत, कागजी नोटों के रूप में भुगतानों का निपटारा करने हेतु उनका प्रयोग असीमित मात्रा में किया जा सकता है।

सिक्कों का उत्पादन

➢ सिक्कों का उत्पादन करने तथा सोने और चाँदी की परख करने एवं तमगों का उत्पादन करने के लिए भारत सरकार की पाँच टकसालें मुम्बई, अलीपुर (कोलकाता), सैफाबाद (हैदराबाद), चेर्लपल्ली (हैदराबाद) तथा नोएडा में स्थित हैं।

➢ टकसालों में सिक्कों के अलावा विभिन्न प्रकार के पदकों (मेडल) का भी उत्पादन किया जाता है।

➢ **NOTE-** 25 पैसे तथा इससे कम मूल्य के सभी सिक्कों का परिचालन जुलाई, 2011 से बंद हो गया है। अर्थात देश में अब 50 पैसे का सिक्का सबसे कम मूल्य की विधिग्राह्य मुद्रा है।

1. इण्डिया सिक्योरिटी प्रेस, नासिक (महाराष्ट्र) –

➢ भारत प्रतिभूति में डाक सम्बन्धी लेखन सामग्री, डाक एवं डाक -भिन्न टिकटों, अदालती एवं गैर - अदालती स्टाम्पों, बैंकों (RBI तथा SBI) के चेकों, बॉण्डों, राष्ट्रीय बचत पत्रों आदि के अलावा राज्य सरकारों, सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों, वित्तीय निगमों आदि के प्रतिभूति पत्रों की छपाई की जाती है।

2. सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस, हैदराबाद

➢ सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस हैदराबाद की स्थापना दक्षिण राज्यों की डाक लेखन सामग्री की मांगों को पूरा करने के लिए की गई तथा यहाँ पूरे देश की केन्द्रीय उत्पाद शुल्क स्टाम्प की छपाई भी होती है।

3. करेन्सी नोट प्रेस, नासिक (महाराष्ट)

➢ नोट प्रेस 1, 2, 5, 10, 50, 100, 500 तथा 2000 रुपये के बैंक नोट छापती है और उनकी पूर्ति करती है।

4. बैंक नोट प्रेस, देवास (मध्य प्रदेश)

➢ देवास स्थित बैंक नोट प्रेस 20, 50, 100, 500 और 2000 रुपये के उच्च मूल्य वर्ग के नोट छापती है।

➢ बैंक नोट प्रेस का स्याही का कारखाना प्रतिभूति पत्रों की स्याही का निर्माण करता है।

5. साल्बोनी (पं. बंगाल) तथा मैसूर (कर्नाटक) के भारतीय रिजर्व बैंक ने दो नयी एवं अत्याधुनिक करेन्सी नोट प्रेस स्थापित की गयी हैं। यहाँ भारतीय रिजर्व बैंक के नियन्त्रण में करेन्सी नोट छापे जाते हैं।

6. सिक्योरिटी पेपर मिल, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

बैंक और करेन्सी नोट कागज तथा गैर - ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर की छपाई में प्रयोग होने वाले कागज का उत्पादन करने के लिए सिक्योरिटी पेपर मिल होशंगाबाद में 1967-68 में चालू की गई थी।

<u>सरकार के बैंकर का कार्य करना</u>

➢ सरकारी बैंकर के रूप में यह निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता है-

(i) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से धन प्राप्त करना और इनके आदेशानुसार इनका भुगतान करना।

(ii) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से जनता से ऋण प्राप्त करना।

(iii) सरकारी कोषों का स्थानान्तरण करना।

(iv) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबन्ध करना।

(v) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को आर्थिक सलाह देना।

<u>रिजर्व बैंक बैंकों का बैंक</u>

➢ बैंकों के बैंक के रूप में यह निम्नलिखित कार्य करता है

(i) रिजर्व बैंक व्यापरिक बैंकों का अंतिम ऋणदाता है।

(ii) रिजर्व बैंक बैंकों की साख नीति का नियंत्रण रखता है।

(iii) वर्ष 1949 के बैंकिंग नियमन अधिनियम के अंतर्गत रिजर्व बैंक को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं; जैसे - अनुसूचित बैंक का निरीक्षण करना, नए बैंकों की स्थापना के लिए अनुज्ञा - पत्र प्रदान करना, आदि।

<u>विदेशी विनिमय कोष का संरक्षण करना</u>

➢ केन्द्रीय बैंक देश के विदेशी विनिमय कोष के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता है। केन्द्रीय बैंक विदेशी मुद्राओं के कोष संचित रखता है जिससे अंतरराष्ट्रीय

नकद आरक्षण अनुपात	• प्रत्येक व्यापारिक बैंक अपनी कुछ जमाओं का एक निर्धारित प्रतिशत रिजर्व बैंक के पास सदैव नकद रूप में रखता है जिसे नकद आरक्षण अनुपात (CRR) कहते हैं । • रिजर्व बैंक इस नकद पर कोई ब्याज बैंक को नहीं देता है । जब रिजर्व बैंक साख मुद्रा वृद्धि करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में कमी कर देता है । और यदि वह साख मुद्रा में कमी करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में वृद्धि कर देता है ।
वैधानिक तरलता अनुपात	• प्रत्येक बैंक को कुल जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल परिसम्पत्तियों के रूप में (सोना अनुमोदित प्रतिभूतियाँ- सरकारी प्रतिभूतियाँ) रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता (SLR) कहा जाता है । • यदि रिजर्व बैंक को साख मुद्रा का प्रसार करना होता है , तो इस अनुपात को कम कर दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोषों में वृद्धि हो सके । • यदि साख का संकुचन करना होता है , तो इस अनुपात को बढ़ा दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोष कम उपलब्ध हो ।
रेपो दर	• रेपो दर वह दर हैं जिस पर रिजर्व बैंक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देकर अर्थव्यवस्था में तरलता की अतिरिक्त मात्रा जारी करता है । • इसका प्रभाव व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है । • इसका प्रयोग तात्कालिक मुद्रा के प्रसार में वृद्धि या कमी के लिए किया जाता है । • मंदी के दौरान रेपों दर में कटौती की जाती है ताकि मुद्रा के प्रसार में वृद्धि हो। ज्यों - ज्यों मंदी का दौर खत्म होता है , रेपो दर से वृद्धि की जाती है ताकि तात्कालिक मुद्रा का प्रसार कम हो ।
रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate)	• यह रेपो दर से उल्टी होती हैं । बैंकों के पास दिनभर के कामकाज के बाद बहुत बार एक बड़ी रकम शेष बच जाती है । बैंक वह रकम अपने पास रखने के बजाए रिजर्व बैंक में रख सकते हैं , जिस पर उन्हें रिजर्व बैंक से ब्याज भी मिलता है । जिस दर पर यह ब्याज मिलता उसे रिवर्स रेपो दर कहते हैं ।
मार्जिनल स्टैंण्डिंग फैसिलिटी (MSF)	• इसके अंतर्गत व्यापारिक बैंक । दिन (24 घण्टे) हेतु ऋण प्राप्त कर सकते हैं । • MSF के माध्यम से बैंक अपनी NDTL के 2.5% तक ऋण प्राप्त कर सकते हैं। • इसमें SLR में रखी प्रतिभूतियों को भी गिरवी रख सकते हैं । • यह सुविधा मात्र वाणिज्यक बैंकों को उपलब्ध है । MSF की ब्याज दर Repo rate से 0.25 % अधिक होती

NOTE- खुले बाजार की क्रियाएँ

खुले बाजार की क्रियाओं से आशय केन्द्रीय बैंक द्वारा बाजार में प्रतिभूतियों, ऋण - पत्रों तथा बिलों के क्रय विक्रय से है । केंद्रीय बैंक द्वारा प्रतिभूतियों को बेचने से बाजार में मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है , जिससे साख का सन्तुलन होता है और प्रतिभूतियों के खरीदे जाने से बाजार में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है तथा साख का विस्तार हो जाता है।

- तरलता की दृष्टि से प्रतिभूतियों एवं ऋणों का अनुक्रम है – नकद, एडहॉक ट्रेजरी बिल्स (इन्हें बंद किया जा चुका है), ट्रेजरी बिल्स तथा कॉल मनी।

ऋणदर का सीमांत लागत (MCLR)

- यह अप्रैल, 2016 में प्रभावी हुआ ।
- यह फ्लोटिंग - रेट ऋणों के लिये एक बेंचमार्क ऋण दर है ।
- यह न्यूनतम ब्याज दर है जिस पर वाणिज्यिक बैंक ग्राहकों को उधार दे सकते हैं ।
- यह दर चार घटकों- धन की सीमांत लागत, नकद आरक्षित अनुषात, परिचालन लागत और परिपक्वता अवधि पर आधारित है ।
- MCLR वास्तविक जमा दरों से जुड़ा हुआ है। इसलिए जब जमा दरों में वृद्धि होती है तो यह इंगित करता है कि बैंकों की ब्याज दर बढ़ने की संभावना है।
- इसका उद्देश्य RBI द्वारा किए गए परिवर्तन का लाभ बैंकों द्वारा उपभोक्ताओं तक पहुँचाना है।

(ix) इरादतन चूक धन की हेराफेरी विवाद , धोखाधड़ी प्रबंधन के विवाद गबन इत्यादि के कारण NPA बढ़ा है ।

B. बाह्य कारण

(i) कच्चे माल की कमी, आगत मूल्य में वृद्धि, औद्योगिक मद्दी, निवेश मूल्य का बढ़ना, ऊर्जा की कमी, प्राकृतिक आपदाएं जैसे बाढ़ , आग आदि ।

(ii) कानूनी जटिलताएं- लम्बी कानूनी उलझने , श्रम कानूनों की जटिलता , गंभीर प्रयासों का अभाव आदि ।

(iii) अन्य देशों में मंदी , प्रतिकूल विनिमय दर , ब्याज दरों में वृद्धि होना ।

(iv) सरकारी नीतियाँ जैसे- उत्पाद शुल्क में परिवर्तन , आयात शुल्क मे परिवर्तन आदि ।

NPA की समस्या समाधान के लिए किये गये सरकारी प्रयास

(1) परिसंपत्ति पुनर्निमाण कपनी -

- यह कंपनियाँ RBI द्वारा पंजीकृत होती है ।
- इसकी स्थापना एक निजी निवेशक या कुछ बैंक मिलकर भी कर सकते हैं ।
- यह बैंकों के डूबे हुए ऋण को बैंक से छूट दर पर खरीदती है तथा अपने कर्मचारियों के सहयोग से इनकी वसूली का कार्य करती है ।
- बढ़ते NPA से निपटने के लिए नीति आयोग एवं केन्द्रीय वित्त मंत्रालय ने RBI और सरकार से इक्विटी फडिग द्वारा एक परिसंपत्ति पुनर्निमाण कंपनी (ARC की स्थापना करने की सिफारिश की है।

(2) दबावग्रस्त परिसंपत्तियों की संधारणीय संरचना योजना (S4A)

- RBI द्वारा कम से कम 500 करोड़ रुपये की ऋण परियोजनाओ जिनका परिचालन शुरु हो गया है को ही इस योजना के तहत् पुनर्संरचनो का पात्र माना गया ।
- इसके अन्तर्गत बैंक गैर - संधारणीय ऋणों को इक्विटी या इक्टिवी सबधी उपकरणों में परिवर्तित करेंगे , जिससे उधारकर्ता का ऋण बोझ कम होने के साथ साथ प्रमोटर्स की इक्विटी हिस्सेदारी कम हो जाएगी ।
- एक बार इस गैर - संधारणीय ऋण के इक्विटी मे बदल जाने के बाद बैंक यह हिस्सेदारी किसी नए मालिक को बेच सकते हैं , जिसके पास एक अधिक प्रबंधनीय ऋण के साथ व्यापार चलाने का अवसर होगा । साथ ही इसके अन्तर्गत एक निगरानी समिति नामक सलाहकार निकाय का भी गठन किया जाएगा जो बैंकों द्वारा प्रस्तुत समाधान योजना की समीक्षा कर सुझाव देगी ।

(3.) मिशन इन्द्रधनुष

- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सुधार के उद्देश्य से वित्त मंत्रालय ने P.J. Nayak समिति के सुझावों के आधार पर 'मिशन इन्द्रधनुष प्रारम्भ किया ।
- **(NOTE- एक अन्य मिशन इन्द्रधनुष भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 25 दिसंबर, 2014 को 'मिशन इन्द्रधनुष' की शुरुआत की थी। जो कि पूर्ण टीकाकरण का उद्देश्य रखता हैं ।)**
- बैंकिंग क्षेत्र में सुधार से सम्बंधित **''मिशन इन्द्रधनुष''** इंद्रधनुष के सात रंगों की तरह इसकी कार्यनीति में बैंकों के सुधार हेतु 7 उपायों पर बल दिया गया है। इसके प्रावधान हैं जो 'A' से प्रारम्भ होते हैं एवम् 'G' से खत्म होते हैं ये इस प्रकार है-

नियुक्तियाँ (Appointment)

इसके तहत चेयरमैन तथा प्रबंध निदेशक इन दोनों को पद को अलग किया गया है, साथ ही इनकी नियुक्ति की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया गया है।

बैंक बोर्ड ब्यूरो (Bank board bureau)

यह प्रख्यात पेशेवरों तथा अधिकारियों की एक संस्था होगी जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पूर्णकालिक निदेशकों तथा गैर सरकारी चेयरमैनों की नियुक्ति करने वाले बोर्ड को प्रतिस्थापित करेगी। 6 सदस्यों वाली इस बोर्ड का कार्य बैंकों के उच्च पदों पर अधिकारियों की नियुक्ति करना होगा इसके अलावा बैंकों की दीर्घकालीन रणनीति के निर्माण में भी इनकी भूमिका होगी।

पूंजीकरण (Capitalization)

वित्तीय रुप से अर्थव्यवस्था तथा बैंकिंग व्यवस्था में विश्वास को बढ़ाने के लिये तथा वित्त संबंधी आकस्मिक चिंताओं से निपटने के लिये बैंकों में पर्याप्त पूंजी का होना आवश्यक है। भारत सरकार **बेसल-3** के न्यूनतम मापदंड से ऊपर एक सुरक्षित बफर के लिये सभी बैंकों का पूंजीकरण करना चाहती है। इसके लिये योजना शुरु होने के प्रथम 4 वर्षों के भीतर सरकार द्वारा बैंकों को 70000 करोड़ रुपए प्रदान किये जाएंगे।

ई-प्रोक्योरमेंट के जरिए ई- निविदा भी आमंत्रित करता है।

बिहार राज्य जलवायु परिवर्तन ज्ञान प्रबंधन केंद्र के लिए वेबसाइट का विकास इस वेब आधारित एप्लीकेशन को इन उद्देश्यों के साथ विकसित किया गया

(1) बिहार में जिला स्तर पर जलवायु असुरक्षा मूल्यांकन करना,

(2) बिहार राज्य जलवायु परिवर्तन कार्ययोजना को सहयोग देना,

(3) जलवायु अनुकूल विकास के लिए राज्य स्तरीय मार्ग विकसित करना,

(4) क्षेत्र वार और जिलावार विकासपथ तैयार करना जिसमें जलवायु परिवर्तन संबंधी अनुकूलता शामिल हो, (5) नमभूमियों का संरक्षण और टिकाऊ उपयोग, तथा

(6) जलवायु परिवर्तन पर ज्ञान का प्रसार। इसमें राज्य के तापमान, वर्षापात और असुरक्षा का मूल्यांकन भी वर्णित है।

सुदूर अनुश्रवण प्रणाली (आरएमएस) :- यह रूफटॉप सोलर विद्युत संयंत्रों वाले सरकारी भवनों और निजी निवासों में सौर विद्युत प्रणाली के प्रदर्शन संबंधी मापदंडों के अनुश्रवण के लिए सौर विद्युत संयंत्र के साथ अंतर्निर्मित है। इसे 2015-16 में शुरु किया गया था। इससे सोलर पैनल द्वारा उत्पादित सौर ऊर्जा की मात्रा के साथ-साथ परिवर्तन दक्षता और बिजली की खपत की मात्रा की जानकारी होती है। यह प्रणाली ऊर्जा उत्पादन और खपत, ऊर्जा के उपयोग को सबसे उपयुक्त बनाने, प्रदर्शन संबंधी विभिन्न मापदंड और सौर विद्युत संयंत्र के विभिन्न घटकों के काम और कामकाज का विश्लेषण करने में सक्षम है।

अध्याय - 8

ऊर्जा क्षेत्र

अनुमानित चरम मांग में काफी सुधार हुआ है जो 2017-1 के 4965 मेगावाट से 4 वर्षों में लगभग 30.4 प्रतिशत बढ़कर 2021-22 में 6475 मेगावाट हो गया। राज्य में ऊर्जा की प्रति व्यक्ति खपत 2017-18 के 280 किलोवाट आवर से बढ़कर 2021-22 में 329 किलोवाट आवर हो गई जो चार वर्षों में 17.5 प्रतिशत की वृद्धि है। चरम मांग की पूर्ति में इस दौरान 46.1 प्रतिशत वृद्धि हुई जो 2017-18 के 4535 मेगावाट से 2021-22 में 6627 मेगावाट हो गई।

- राज्य में बिजली की उपलब्ध क्षमता 2020-21 में 6422 मेगावाट थी जो 2021-22 में 21.2 प्रतिशत बढ़कर 7785 मेगावाट हो गई। बिजली की बढ़ी मांग पूरी करने के लिए राज्य सरकार ने 2024-25 तक विभिन्न स्रोतों से चरणबद्ध ढंग से 5841 मेगावाट अतिरिक्त क्षमता के लिए योजना बनाई है।
- राज्य में बिजली की मांग 2021-22 में 6576 मेगावाट थी जो 2022-23 में 7.3 प्रतिशत बढ़कर 7054 मेगावाट हो गई। वर्ष 2024-25 में राज्य में बिजली की अनुमानित मांग 8003 मेगावाट हो जाएगी और 4232.0 करोड़ यूनिट ऊर्जा की जरूरत होगी।
- बिहार विद्युत वितरण कंपनी लि. और दक्षिण बिहार विद्युत वितरण कंपनी लि., दोनों कंपनियां मार्च 2022 में उत्तर लगभग 179.20 लाख विद्युत उपभोक्ताओं को सेवा दे रही थीं, जिनकी संख्या 2017-18 में 110.2 लाख थी।
- इसका अर्थ चार वर्षों में 62.6 प्रतिशत की वृद्धि है। घरेलू उपभोक्ताओं की संख्या 2017-18 के 101.40 लाख से बढ़कर 2021-22 में 160.49 लाख हो गई जो चार वर्षों में 58.3 प्रतिशत वृद्धि है।
- वितरण कंपनियां बिल और संग्रहण प्रणाली में सुधार लाकर तथा सभी उपभोक्ताओं के कनेक्शन में मीटर लगाकर अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार लाने के लिए चतुर्दिक प्रयास कर रही हैं। इसके चलते सकल तकनीकी एवं व्यावसायिक ह्रास (एटी एंड सी) 2015-16 के 43.5 प्रतिशत से घटकर 2021-22 में 29.4 प्रतिशत रह गया।
- मार्च 2021 में बिजली उत्पादन की कुल क्षमता 6422 मेगावाट थी। यह 21 प्रतिशत बढ़कर मार्च

2022 में 7785 मेगावाट हो गई। मार्च 2021 से मार्च 2022 के बीच कोयला आधारित ताप विद्युत की वृद्धि दर 9.1 प्रतिशत और नवीकरणीय स्रोतों की वृद्धि दर 130.6 प्रतिशत थी ।

बिजली की उपलब्धता

बिहार में बिजली की उपलब्धता का मूल मुद्दा यह सुनिश्चित करने के लिए मांग और आपूर्ति की ऐसी स्थिति है। जिससे राज्य में आपूर्ति में कमी नहीं हो। बिहार में अनुमानित चरम मांग में भी काफी सुधार हुआ है जो 2017-18 के 4965 मेगावाट से 2021-22 में 6475 मेगावाट हो गई है। इसका अर्थ चार वर्षों में 30.4 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है। राज्य में ऊर्जा की प्रति व्यक्ति खपत भी 2017-18 के 280 किलोवाट आवर से बढ़कर 2021-22 में 329 किलोवाट आवर हो गई है। जो 4 वर्षों में 17.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

वहीं, मांग की चरम पूर्ति में लगभग 46.1 प्रतिशत वृद्धि हुई जो 2017-18 के 4535 मेगावाट से बढ़कर 2021-22 में 6627 मेगावाट पहुंच गई। 2017-18 में 9.4 प्रतिशत की सर्वोच्च कमी (पीक डेफिसिट) रहती थी जो घटकर 2019-20 में लगभग शून्य हो गई थी।

राज्य में बिजली की कुल खपत 2017-18 में 2.42 हजार करोड़ यूनिट थी जो 2021-22 में बढ़कर 3.28 हजार करोड़ यूनिट हो गई। इसका अर्थ चार वर्षों में 35.4 प्रतिशत की वृद्धि है।

बिजली की जरूरत का अनुमान :- विद्युत क्षेत्र में राज्य में बिजली की कुल जरूरत में घरेलू उपभोक्ताओं की जरूरत का 2021-22 में 63 प्रतिशत और 2022-23 में 62.1 प्रतिशत हिस्सा था।

विद्युत क्षेत्र का संस्थागत ढांचा- नवंबर 2012 तक राज्य में विद्युत उत्पादन, संचरण, वितरण और बिजली संबंधी अन्य गतिविधियों के प्रबंधन की जिम्मेवारियों के साथ बिहार राज्य विद्युत बोर्ड काम कर रहा था। नई बिहार राज्य विद्युत सुधार अंतरण योजना, 2012 के तहत, नवंबर 2012 में बिहार राज्य विद्युत बोर्ड को 5 कंपनियों में बांट दिया गया

- बिहार राज्य विद्युत (होल्डिंग) कंपनी लिमिटेड (बी. एस. पी. एच. सी. एल.),
- बिहार राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी लिमिटेड (बी.एस.पी.जी.सी.एल.),
- बिहार राज्य विद्युत संचरण कंपनी लिमिटेड (बी.एस.पी.टी.सी.एल.),
- उत्तर बिहार विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (एन.बी.पी. डी. सी. एल.) और
- दक्षिण बिहार विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (एस.बी.पी.डी. सी. एल.) ।

बिहार राज्य विद्युत (होल्डिंग) कंपनी लिमिटेड (बी.एस.पी.एच.सी.एल.) :- इस कंपनी को नई बनी चार कंपनियों के शेयरों का स्वामित्व दिया गया है। ये कंपनियां हैं बिहार राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी लिमिटेड, बिहार राज्य विद्युत संचरण कंपनी लिमिटेड, दक्षिण बिहार विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड और उत्तर बिहार विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड। इसे पूर्ववर्ती बिहार राज्य विद्युत बोर्ड की परिसंपत्तियां, संपत्ति के हित, अधिकार और दायित्व भी सुपुर्द किए गए हैं। यह एक निवेश कंपनी है जो अन्य चारों कंपनियों के कार्यों का समन्वय करती है, विवादों का निपटारा करती है और उन्हें सारे आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराती है।

बिहार राज्य विद्युत संचरण कंपनी लि. (बी.एस.पी. टी. सी. एल.) :- यह कंपनी विद्युत संचरण के लिए जवाबदेह है। इसे पूर्ववर्ती बिहार राज्य विद्युत बोर्ड की संचरण संबंधी परिसंपत्तियों का स्वामित्व, संपत्ति के हित, अधिकार और दायित्व सुपुर्द किए गए हैं। इस कंपनी से योजना निर्माण और समन्वय संबंधी कार्यों के अलावा, बिजली के लिए राज्य के अंदर संचरण लाइनों की कुशल व्यवस्था विकसित करने और उत्पादन केंद्रों से भार केंद्रों (लोड सेंटर) तक जोड़ने की भी आशा की जाती है।

उत्तर बिहार विद्युत वितरण कंपनी लि. (एन.बी. पी. डी. सी. एल.) और दक्षिण बिहार विद्युत वितरण कंपनी लि. (एस.बी.पी. डी. सी. एल.) :- ये दोनो कंपनियां सभी उपभोक्ताओं तक बिजली के वितरण और बिजली के व्यापार का काम करती हैं। ये ग्रामीण विद्युतीकरण योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए भी जिम्मेवार रही हैं जिसके सारे काम पूरे हो गए हैं। विद्युत अधिनियम, 2003 के अनुसार वितरण क्षेत्र में खुली उपलब्धता शुरू करने का काम और नियंत्रक के निर्देशों का अनुपालन भी इन दोनों कंपनियों का दायित्व है।

कार्यसंचालन और वित्त संबंधी स्थिति :- दोनो विद्युत वितरण कंपनियों की वित्तीय स्थिति तालिका 8.10 में प्रस्तुत है। बिहार में बिजली का उत्पादन और खरीद (केंद्रीय वितरण जनित हास को छोड़कर)

2019-20 के 2997.5 करोड़ यूनिट से 2021-22 में 3338.8 करोड़ यूनिट हो गई जिसका अर्थ दो वर्षों में 11.5 प्रतिशत की वृद्धि है।

पुनर्गठित त्वरित विद्युत विकास एवं सुधार कार्यक्रम (आर-एपीडीआरपी) : यह योजना केंद्र सरकार द्वारा 11वीं योजना में स्वीकृत हुई थी जिसे बाद में 12वीं योजना के तहत स्वीकृत समेकित विद्युत विकास योजना में समाहित कर दिया गया था। प्रणाली का सुदृढ़ीकरण और वितरण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का सक्षमीकरण इस योजना के मुख्य घटक थे।

प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) :- 'हर घर बिजली' राज्य सरकार के सात निश्चयों में से एक थी जिसका लक्ष्य हर इच्छुक परिवार को बिजली का कनेक्शन उपलब्ध कराना था। सभी ग्रामीण बीपीएल परिवारों का आच्छादन ग्रामीण विद्युतीकरण दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के तहत हो चुका था और ग्रामीण एपीएल परिवारों के लिए कोई योजना नहीं थी। इसलिए राज्य सरकार द्वारा बिना बिजली वाले एपीएल परिवारों को सेवा कनेक्शन देने के लिए मुख्यमंत्री विद्युत संबंध निश्चय योजना के तहत एक योजना स्वीकृत की गई थी। राज्य सरकार ने सौभाग्य को अपनाकर मुख्यमंत्री विद्युत संबंध निश्चय योजना को उसमें समाहित कर दिया। 1183.00 करोड़ रु. के व्यय से ग्रामीण क्षेत्रों के सभी इच्छुक परिवारों को 32,59,051 बिजली कनेक्शन देने वाली यह योजना अक्तूबर 2018 में पूरी हो गई।

विद्युत क्षेत्र की योजनाएं केंद्र सरकार की योजनाएं :- पूरे राज्य में विद्युत आपूर्ति के आच्छादन का दायरा बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार ने हाल के वर्षों में बिहार में कई कार्यक्रमों का क्रियान्वयन शुरू किया था।

इनमें से छः पूरे हो चुके हैं :-

(1) ग्रामीण विद्युतीकरण दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (आरई-डीडीयूजीजेवाई) जो पूर्व में 11वीं योजना के चरण-2 और 12वीं योजना के तहत राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना थी

(2) पुनर्गठित त्वरित विद्युत विकास एवं सुधार कार्यक्रम (आर-एपीडीआरपी) के तहत सूचना प्रौद्योगिकी के क्रियान्वयन के जरिए प्रणाली का सशक्तीकरण,

(3) दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई),

(4) समेकित विद्युत विकास योजना (आइपीडीएस),

(5) तत्क्षण आंकड़ा अधिग्रहण प्रणाली (आरटी-डीएएस) और

(6) प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य)। हाल में ग्रिड संपर्कित रूफटॉप (जीसीआरटी) सौर विद्युत संयंत्र और संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (आरडीएसएस) का ह्रास न्यूनीकरण घटक, दो योजनाएं सवीकृत हुई हैं और उनका क्रियान्वयन प्रक्रियाधीन है।

ग्रामीण विद्युतीकरण दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (आरई-डीडीयूजीजेवाई) :- राज्य के सभी 38 जिलों के सभी गांव टोलों के पूर्ण विद्युतीकरण के लिए ग्रामीण विद्युतीकरण दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (पूर्व में राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना) दो योजना अवधियों के तहत स्वीकृत थीं, 11 जिलों के लिए 11वीं योजना, चरण-2, और 27 जिलों के लिए 12वीं योजना 10,643 करोड़ रु. के व्यय से उनका काम 2021 में ही पूरा हो चुका है।

दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) :- ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रिड से मिलने वाली बिजली के कनेक्शन में सुधार का बहुत महत्व है। राज्य के सभी 38 जिलों में ग्रामीण विद्युतीकरण दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (आरई डीडीयूजेजीवाई) के तहत ग्रामीण विद्युतीकरण का काम पूरा हो गया था और सभी गांव-टोले पूर्णतः विद्युतीकृत हो गए थे। इसलिए केंद्र सरकार ने दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना का आरंभ इन उद्देश्यों के साथ किया-

(1) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और कृषीतर उपभोक्ताओं के लिए उचित आपूर्ति बहाल करने में मदद करने के लिए कृषि और कृषीतर फीडरों को अलग करना।

(2) ग्रामीण क्षेत्रों में ट्रांसफर्मरों / फीडरों / उपभोक्ताओं के घरों में मीटर लगाने सहित उप संचरण और वितरण अधिसंरचना का सुदृढ़ीकरण करना।

(3) राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना (आरजीजीवीवाई) के तहत तय लक्ष्यों को प्राप्त करने के वास्ते इस योजना के लिए स्वीकृत परिव्यय

अध्याय - 9

ग्रामीण विकास

जीविका के नाम से मशहूर बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति (बीआरएलपीएस) ने राज्य में 1.27 करोड़ परिवारों तक पहुंचकर खुद को राज्यव्यापी आंदोलन में तब्दील कर दिया है। सितंबर 2022 तक जीविका के तहत 10.35 स्वयं सहायता समूह बने थे जिनमें से 2.45 लाख का बैंकों के साथ ऋण - संपर्क हो चुका था। अभी उनका कुल बकाया ऋण 5574 करोड़ रु. है।

- मनरेगा के तहत रोजगार उपलब्ध कराए गए परिवारों की संख्या 2017-18 के 22.5 लाख से बढ़कर 2021-22 में 48.0 लाख हो गई। रोजगार सृजन भी काफी बढ़ा और 817.2 लाख व्यक्ति दिवस से 2021-22 में 1811.8 लाख व्यक्ति दिवस पहुंच गया। मनरेगा के तहत खुले खातों की कुल संख्या 2017-18 में 67.0 लाख थी जो 2021-22 में बढ़कर 104.9 लाख हो गई।
- मनरेगा के तहत पूरे हुए कार्यों में लगातार वृद्धि हुई है जो 2017-18 के महज 1.1 लाख से 2021-22 में 13.0 लाख हो गई। इसी प्रकार योजना के तहत धनराशि का उपयोग भी बढ़ा और 2017-18 के 91.2 प्रतिशत से 2021-22 में 98.1 प्रतिशत हो गया।
- बासगीत जमीन के वितरण के लिए कुल बजट आवंटन 2019-20 के 4057.00 करोड़ रु. से बढ़कर 2021-22 में 7148.99 करोड़ रु. हो गया। योजना के विभिन्न घटकों के तहत कुल 88,494 पात्र परिवारों को बासगीत जमीन उपलब्ध कराई है। शेष 27,356 परिवारों को 2022-23 तक बासगीत जमीन उपलब्ध करा दी जाएगी।
- जन वितरण प्रणाली के तहत 2021-22 में कुल 5474.9 हजार टन खाद्यान्नों का आबंटन हुआ जिसमें से 2208.2 टन गेहूं और 3266.7 टन चावल था। वर्ष 2017-18 और 2021-22 के बीच खाद्यान्नों का औसत उठाव 97.9 प्रतिशत था। आंकड़े दर्शाते हैं कि सभी जिलों में गेहूं और चावल का उठाव लगभग 100 प्रतिशत था।
- मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना के क्रियान्वयन के लिए 4290 पंचायतों को चुना गया है और 99.5 प्रतिशत पूर्णता दर के साथ 57,690 वार्डों में काम पूरे हो गए हैं। इसी प्रकार, मुख्यमंत्री ग्रामीण गली नाली पक्कीकरण योजना के तहत कुल 8386 पंचायत चुने गए जिनमें 1,14,691 वार्ड हैं। संशोधित लक्ष्य वाले सभी वार्डों में से 1,14,507 में काम पूरे हो गए हैं।
- सात निश्चय -2 के तहत, मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर स्ट्रीट लाइट योजना का आरंभ 2022-23 से राज्य के हर पंचायत के लिए किया गया है। इस योजना के तहत हर वार्ड में 10 सोलर स्ट्रीट लाइट लगाए जाएंगे।
- साथ ही विद्यालय, पुस्तकालय आदि सामुदायिक संस्थानों के लिए हर पंचायत में 10 अतिरिक्त सोलर स्ट्रीट लाइट होगी। यह देश में अपने किस्म की पहली योजना है और इससे प्रति वर्ष 7 करोड़ 88 लाख 40 हजार किग्रा कार्बन डायक्साइड का उत्सर्जन घटेगा। यह 35.83 लाख वृक्षारोपण के बराबर है।
- वर्ष 2022-23 में हर ग्राम पंचायत के चार वार्ड में इसके तहत काम होगा और शेष में 2023-24 में काम होने की आशा है।

परिचय

ग्रामीण विकास बिहार में ही नहीं, संपूर्ण भारत के आर्थिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण विकास की अवधारणा का तात्पर्य ग्रामवासियों के जीवन स्तर में, खास कर सुदूर क्षेत्रों में समग्रता में सुधार से है। दूसरे शब्दों में, ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण आबादी को आर्थिक और सामाजिक, दोनों तरह से ऊपर उठाने की योजना से है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बिहार की 89 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों का विकास राज्य के समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण है।

गत पांच वर्षों में राज्य सरकार ने ग्रामीण विकास पर अपने व्यय का औसतन 10.1 प्रतिशत खर्च किया है जो संपूर्ण भारत के स्तर पर इसके 4.8 प्रतिशत हिस्से के दूने से भी अधिक है। कुल व्यय में ग्रामीण विकास पर व्यय का हिस्सा बिहार में आम तौर पर बढ़ता गया है जबकि संपूर्ण भारत के स्तर पर सामान्यतः घटता गया है। वर्ष 2021-22 में बिहार में ग्रामीण विकास पर व्यय 15.6 हजार करोड़ रु. था जो 2019-20 के 13.2 हजार करोड़ रु. से 18.6 प्रतिशत अधिक है।

बिहार और भारत में ग्रामीण विकास पर व्यय का प्रतिशत (2017-18 से 2021-22)

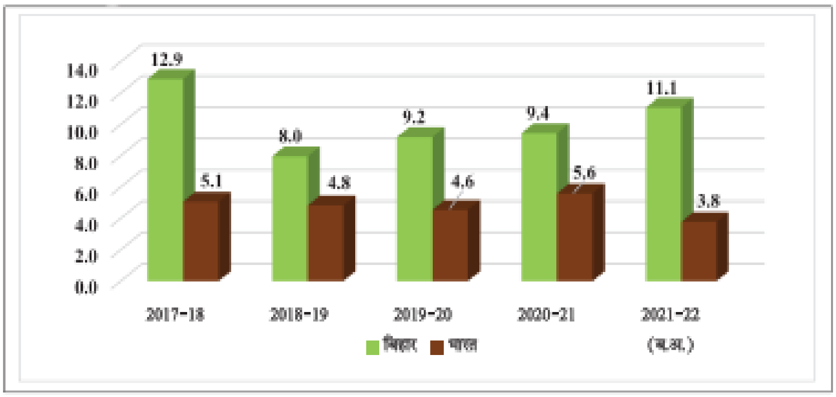

जीविका :- 'जीविका' के नाम से मशहूर बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति (बीआरएलपीएस) ग्रामीण विकास विभाग के तत्वावधान में निबंधित संस्था है। यह संस्था बिहार के ग्रामीण विकास में मुख्य भूमिका निभाती है। सितंबर 2022 तक जीविका के तहत 10.35 लाख स्वयं सहायता समूह गठित हुए थे जिनमें से 2.45 लाख समूहों का बैंकों के साथ ऋण-संपर्क है। अभी बैंक ऋण 5574 करोड़ रु. का है ।

वर्ष 2022-23 ने जीविका के रूपांतरण के नए युग की शुरुआत को चिन्हित किया क्योंकि समिति ने विविधतापूर्ण आजीविका पर फोकस किया, मानव विकास के लिए व्यवहार परिवर्तन संवाद के विभिन्न मॉड्यूल सामने लाए और ग्रामीण गरीबों की आमदनी बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाओं का कनवर्जेंस किया।

जीविका के अंतर्गत प्रगति (2017-18 से 2021-22)

(आंकड़े हजार में)

सूचक	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22
गठित महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या	848.9	948.2	1028.1	1035.2	1035.5
गठित ग्राम संगठनों की संख्या	55.6	60.4	64.6	67.6	68.4
गठित संकुल स्तरीय संघों की संख्या	0.9	1.0	1.2	1.4	1.4
बैंकों के साथ प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ ऋण-संपर्कों वाले स्वयं समूहों की संख्या	810.4	1034.9	1211.5	1457.1	1586.7
बैंक ऋण की रकम (करोड़ रु.)	8.2	12.0	15.5	21.1	24.0

स्रोत : जीविका, बिहार सरकार

बैंकिंग हस्तक्षेप में 4571 बैंक सखियों को व्यवहार परिवर्तन अभिकर्ताओं के रूप में चुना गया। इसके कारण 7881.4 करोड़ रु. की लेनदेन हुई और 1934.2 लाख रु. का कमीशन मिला। इसी प्रकार पशु सखी मॉडल और मछलीपालन संबंधी हस्तक्षेप में आच्छादन और उत्पादन के लिहाज से उल्लेखनीय प्रगति हासिल हुई है।

नवीकरणीय ऊर्जा :- जीविका ने 'जीविका वीमन इनिशिएटिव फॉर रिन्यूएबल एनर्जी एंड सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड' नामक सौर उर्जा कंपनी का प्रवर्तन किया है जिसे आम तौर पर 'जे वायर्स' के नाम से जाना जाता है। कंपनी सौर और विद्युत उत्पादों के उत्पादन, वितरण और कस्टमाइज्ड स्थापना सेवाओं के लिए काम कर रही है। इसकी कुछ विशेष गतिविधियां नीचे वर्णित हैं।

(क) ऑक्सफैम इंडिया के साथ साझेदारी में कंपनी ने 1400 सोलर लैंप एसेंबल करके परिवारों को उपलब्ध कराए हैं और सीतामढ़ी तथा नालंदा जिलों में स्ट्रीट लाइन की 185 इकाइयां लगाई हैं।

(ख) 'एस मार्ट' और ग्रामीण खुदरा बाजार के नाम से जाने जाने वाले सौर बाजारों के नेटवर्क के जरिए 9 वाट के 35,000 ऊर्जा कुशल एसी एलईडी बल्बों की बिक्री की गई है।

(ग) जीविका और मुंबई स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) ने बीएलडीसी प्रौद्योगिकी के लिए परिवारों की भुगतान करने की इच्छा

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vl

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

whatsapp- 1 https://wa.link/y7qfk6 web.- https://bit.ly/449wOMs

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/y7qfk6

Online order - https://bit.ly/449wOMs

Call करें - 9887809083